A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 28 अक्टूबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-60 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

'चदरिया' की 'चमकार' के लिए चिंतित चंद्रचूड़

उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

सेवानिवृत्ति की पूर्व बेला में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ का आत्म-बोध नैसर्गिक व्यवसायिक विडम्बनाओं और विरोधाभासों के बैक-ड्रॉप में उन सवालों के रूबरू खड़ा है, जो अकस्मात ही उनके इर्दगिर्द मंडराने लगे हैं। जस्टिस चंद्रचूड़ 10 नवम्बर 2024 को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। 11 सितम्बर,2024 को गणेशोत्सव के दौरान उनके घर पर सम्पन्न गणेश-पूजा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की शिरकत ने उनके प्रति आलोचनात्मक सवालों को घनीभूत किया है। इससे पहले विभिन्न संवैधानिक मुद्दों पर विभिन्न प्रकरणों में दलीलों के दौरान सुप्रीम कोर्ट में उनकी भूमिका से जुड़े सवाल कानाफूसी तक ही सीमित थे,लेकिन अब वो मुखर हो चले हैं।

सत्तालोलुप राजनीतिक प्रदूषण से सराबोर लोकतंत्र की रक्षक संवैधानिक संस्थाएँ काजल की कोठरी में तब्दील हो चुकी हैं। कदाचित, अब किसी के लिए भी यह संभव नहीं रहा है कि वो कबीर की तर्ज पर 'ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया' की भाव-भूमि पर काजल की कोठरी से बेदाग निकल सके। जस्टिस डी.वाय. चंद्रचूड़ को एहसास है कि झूठ-बेईमानी, लोभ-लिप्सा, चोरी-भ्रष्टाचार, खून-खराबा जैसे गुनाहों की गरम हवाओं के साथ उड़ती कालिख आसानी से किसी पर भी चस्पां हो सकती है। पिछले डेढ़-दो महिनों के घटनाक्रमों ने उन्हें कठिन सवालों के अंधे मोड़ के सामने खड़ा कर दिया है। शायद इसीलिए वो खुद के सामने खड़े होकर खुद से जिरह करते महसूस हो रहे हैं।

आमतौर पर शांत और संयमित रहने वाले जस्टिस चंद्रचूड़ खुद से जिरह करने की बानगी सबसे पहले भूटान के पारो में जेएसडब्ल्यू लॉ स्कूल के दीक्षान्त समारोह में सामने आई। चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने बताया कि 'वो खुद से सवाल पूछते हैं कि देश और इतिहास मेरे कार्यकाल का मूल्यांकन कैसे करेगा'? उन्होंने टिप्पणी की कि मुझे थोड़ा कमजोर होने के लिए माफ करें। मैं अपने देश की दो साल तक सेवा करने के बाद इस साल नवम्बर में भारत के मुख्य न्यायाधीश के रूप में पद छोड़ दूंगा। जैसे-जैसे मेरा कार्यकाल समाप्त हो रहा है, मेरा मन भविष्य और अतीत के बारे में आशंकाओं और चिंताओं से बहुत अधिक ग्रस्त है।

जस्टिस चंद्रचूड़ आगे कहते हैं कि 'मैं खुद को तौलने वाले सवालों पर विचार करते हुए पाता हूँ'। जैसे, 'क्या मैंने वह सब हासिल कर लिया, जो मैंने करने का लक्ष्य रखा था'? 'इतिहास मेरे कार्यकाल का आकलन कैसे करेगा'? 'क्या मैं चीजों को अलग तरीके से कर सकता था'? 'मैं न्यायाधीशों और कानूनी पेशेवरों की भावी पीढ़ी के लिए क्या विरासत छोड़ूंगा?' अपनी जिंदगी के सफरनामें को टटोलते हुए चीफ जस्टिस ने कहा कि ''आप में से कई लोगों की तरह मैं भी आसपास की दुनिया में बदलाव लाने के अथक जुनून के साथ बड़ा हुआ हूँ। इस अतृप्त उत्साह से प्रेरित होकर बदलाव लाने के लिए खुद को चरम सीमा तक ढकेल दिया।''

जस्टिस चंद्रचूड़ की यह कहानी एक लंबा फसाना है, जिस पर टीका-टिप्पणियों का अंतहीन सिलसिला चलने वाला है। वैसे कोई भी न्यायालय कभी भी किसी भी दशा में आलोचनात्मक समीक्षाओं से परे अथवा अछूता नहीं रह सकता। भारत का सुप्रीम कोर्ट भी इसका अपवाद नहीं है। वजह यह है कि कोर्ट में होने वाले फैसलों की व्यापकता और गहराई आम आदमी के सरोकारों से जुड़ी होती है। सम्बन्धित पक्ष अपनी अनुकूलताओं को ध्यान में रख कर इसकी समीक्षा करते हैं। भारत के पचासवें चीफ जस्टिस के रूप में डीवाय चंद्रचूड़ के कार्यकाल की समीक्षा का दौर लंबा चलने वाला है।

हालिया दिनों में देश के कानूनी टिप्पणीकारों का एक वर्ग कुछ प्रमुख संवैधानिक मुद्दों पर सुप्रीम कोर्ट का पलड़ा केन्द्र सरकार की ओर झुका हुआ महसूस करता है। लेकिन एक तथ्य यह भी है कि जस्टिस चंद्रचूड़ की टिप्पणियों ने केन्द्र सरकार को कभी सहज महसूस नहीं होने दिया। केन्द्र सरकार उनकी टिप्पणियों से हमेशा परेशान रहती थी। हाल के वर्षो मे सुप्रीम कोर्ट ने राम-जन्म भूमि, ईडब्ल्यूएस आरक्षण, नोटबंदी, सेंट्रल विस्टा और राफेल जैसे देश की राजनीति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण निर्णय दिए हैं। ये सभी केन्द्र सरकार के लिए राजनीतिक अनुकूलताएं पैदा करने वाले थे। इससे यह धारणी बनी कि सुप्रीम कोर्ट का झुकाव केन्द्र सरकार की ओर है। पक्षधरता ही न्याय-पालिका की स्वतंत्रता पर संदेह पैदा करती है।

कानूनविदों और विधि जानकारों का कहना है कि जस्टिस चंद्रचूड़ के पहले पदासीन दो मुख्य न्यायाधीश एनवी रमना और एसए बोबड़े के खिलाफ कानूनी गलियारों में यह शिकायत थी कि वो संवैधानिक मुद्दों को लंबित रखने की रणनीति पर काम करते हैं। इसके तहत नागरिकता संशोधन विधेयक, धारा 370, और चुनावी बॉण्ड जैसे महत्वपूर्ण मामले गिनाए जाते थे। कतिपय महत्वपूर्ण मामलों में यह प्रवृत्ति आज भी मौजूद है।

हालांकि चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने चुनावी बॉण्ड जैसे महती सवाल का निराकरण करने का काम किया है, लेकिन कानूनविद और राजनेता उसे आधा अधूरा फैसला मानते हैं। विधि विशेषज्ञों की धारणा है कि जस्टिस चंद्रचूड़ को सिर्फ चुनावी बॉण्ड को निरस्त करने तक सीमित नहीं रहना था। इस मामले में केन्द्र सरकार की कार्य पद्धति को भी जांच के दायरे में लेना था। जस्टिस चंद्रचूड़ ने सुप्रीम कोर्ट में अपने आठ साल के कॅरियर के दरम्यान कोई 597 फैसले लिपिबद्ध किये और 1211 बैंचों का हिस्सा रहे। सुप्रीम कोर्ट के मौजूदा जजों में चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ सबसे ज्यादा निर्णय लिखने वाले न्यायमूर्ति माने जाते हैं।

मुंबई के एक कार्यक्रम में जस्टिस चंद्रचूड़ का एक ताजा उदबोधन नए सिरे से उनके आत्मावलोकन और आत्म-बोध को उद्वेलित और उत्प्रेरित करने वाली चिंताओं का खुलासा करता महसूस होता है। जस्टिस चंद्रचूड़ का कहना है कि 'मुख्य न्यायाधीशों और सरकार प्रमुख के बीच होने वाली मुलाकातों को कोई डील या षड्यंत्र नहीं माना जाना चाहिए।' मुख्य न्यायाधीश के निवास पर आयोजित गणेश-पूजा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की शिरकत के बाद न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने नेताओं से मुलाकातों को लेकर पहली बार खुलकर कोई बात कही है। उन्होने स्पष्ट किया की सरकार के प्रमुख जब हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस से मिलते हैं, तो उन मुलाकातों मे एक राजनीतिक और पेशेवर परिपक्वता होती है। सरकार के मुखिया से मिलने के यह मायने निकालना सरासर गलत है कि उनके बीच कोई डील हो गई है।

उन्होंने कहा कि न्याय पालिका और कार्य पालिका के बीच प्रशासनिक कामकाज के लिए सिर्फ पत्राचार के जरिए संवाद पर्याप्त नही होता है। इसके लिए मिलना पड़ता है। इन मुलाकातों मे राजनीतिक परिपक्वता होती है। मेरे कॅरियर के दौरान किसी भी मुख्यमंत्री ने कभी भी किसी प्रकरण के बारे में बात नहीं की। यह एक परम्परा है कि मुख्यमंत्री और मुख्य न्यायाधीश त्योहारों और शोक में एक-दूसरे से मिलते हैं। यह मेल-मिलाप न्यायिक प्रक्रियाओं पर कभी भी कोई असर नहीं डालता है। बहरहाल, मुंबई के इस भाषण से जस्टिस चंद्रचूड़ के मन की खराश के पहलू सामने आते हैं।

वैसे पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपने कार्यकाल की उपलब्धियों के आकलन से जुड़े सवाल पर कहा था कि उनके कामकाज की समीक्षा इतिहास करेगा। वैसे ही जस्टिस चंद्रचूड़ के कार्यकाल की समीक्षा इतिहास ही कर पाएगा। उन्हें इस बात का एहसास बखूबी होगा कि उनके पूर्ववर्ती मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई को इतिहास किस तरह याद करता है?

सुप्रभात

एक आदमी लेटा है खाट पर
एक औरत बैठी है नीचे
पंखा झलती हुई
सदियों पुराना चित्र है यह
इसके रंग अभी तक शोख हैं
मैं इसे कुछ जुदा ढंग से बनाता हूं
ऐसे नहीं कि औरत लेटी है खाट पर
आदमी नीचे बैठा है पंखा झलता हुआ
यह तो मुमकिन नहीं
औरत की बीमारी में भी
मैं उन दोनों को खाट पर बैठाता हूं
और हंसते खिलखिलाते सुख-दुख की
बतियाते बारी-बारी से पंखा झलते देखा हूं
पर चित्र पूरा होने से पहले ही आदमी
धकिया कर औरत को उतार देता है
और बेहयाई से खाट पर पसर जाता है
औरत मन मार कर पंखा झलती है
जमीन पर बैठी हुई।

- विनोद पदरज

सतना में बनेगा स्पोर्ट्स कॉलेज और सिंथेटिक ट्रैक : मुख्यमंत्री

● स्पोर्ट्स कॉलेज के लिए 15 करोड़ और सिंथेटिक ट्रैक के लिए 7 करोड़ स्वीकृत ● पीएम मोदी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से भारतवासी सभी क्षेत्रों में कर रहे हैं उपलब्धियां अर्जित

अनुशासन-आत्मविश्वास-बौद्धिक-प्रखरता-निडरता व एकाग्रता विकसित करने में सहायक हैं खेल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि खेल से व्यक्तित्व में अनुशासन, आत्म-विश्वास, बौद्धिक, प्रखरता, निडरता और एकाग्रता विकसित होती है। मध्यप्रदेश ने खेलो इंडिया यूथ गेम में देश में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया, शूटिंग में प्रदेश ने 15 मेडल अर्जित किए, ओलंपिक में शामिल हुई भारत की हॉकी टीम में प्रदेश के खिलाड़ी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रदेश में 18 खेलों की 11 राज्य अकादमियों का संचालन हो रहा है। यह प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सतना में स्पोर्ट्स कॉलेज के लिए 15 करोड़ रुपए स्वीकृत करने की घोषणा की तथा सिंथेटिक ट्रैक निर्माण के लिए 7 करोड़ रुपए भी स्वीकृत किए। साथ ही बाउंड्री वॉल और अन्य निर्माण कार्यों के संबंध में जिला कलेक्टर को निर्देश प्रदान किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सतना में अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित 35 वें अखिल भारतीय खेलकूद (एथलेटिक्स) समारोह 2024 के समापन अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 35वें अखिल भारतीय खेलकूद (एथलेटिक्स) प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए। कार्यक्रम में अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी भी दी गई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों उपलब्धियां अर्जित की है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पदक विजेता खिलाड़ियों को सराहना के साथ ही सर्वश्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद पदक प्राप्त करने से चूकने वाले खिलाड़ियों का भी उत्साहवर्धन किया। खेल हो या वैज्ञानिक अनुसंधान का क्षेत्र, प्रधानमंत्री श्री मोदी भारतीय परंपरा का अनुसरण और खेल भावना का परिचय देते हुए सभी क्षेत्रों की प्रतिभाओं को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित करने के लिए निरंतर प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।

चित्रकूट के विकास में कोई कमी नहीं रखेंगे : सीएम यादव

● यूपी सरकार के साथ मिलकर ऐसा काम करेंगे, आनंद आ जाए; पत्नी के साथ बैठकर रामलीला देखी

सतना (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि अयोध्या के समान सरकार चित्रकूट के भी विकास में कोई कमी नहीं रखेगी। यूपी और हमारी एमपी की सरकार मिलकर ऐसा काम करेगी की आनंद आ जाएगा। सीएम ने भारत रत्न नानाजी देशमुख को याद करते हुए कहा कि 1992 में जब यहां डाकुओं का राज था, अव्यवस्थाएं फैली हुई थी, तब उन्होंने यहां के विकास का संकल्प लिया था। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने सभी त्योहारों को धूमधाम से मनाने का संकल्प लिया है। कुछ दिनों पहले ही सरकार ने दशहरा मनाया था। हमने तय किया है कि गोवर्धन पूजा भी करेंगे और घर-घर गौमाता को पालने के लिए प्रेरित भी करेंगे। दूध उत्पादन की क्षमता जो अभी 9 प्रतिशत है, उसे 20 प्रतिशत तक ले जाएंगे। दूध और उससे बने उत्पादों को बढ़ावा देंगे ताकि पशुपालन को प्रोत्साहन मिले। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव शनिवार शाम सतना जिले के दो दिवसीय प्रवास पर चित्रकूट पहुंचे हैं। उन्होंने चित्रकूट के राघव प्रयाग घाट पर अंतरराष्ट्रीय रामलीला उत्सव के समापन समारोह में सहभागिता की, उन्होंने पत्नी सीमा यादव के साथ बैठकर रामलीला का मंचन भी देखा।

डिजिटल अरेस्ट से बचने के लिए पीएम मोदी ने बताए तीन 'स्टेप'

बोले-फ्रॉड कॉल आने पर रुको, सोचो और फिर ऐक्शन लो

नई दिल्ली (एजेंसी)। मन की बात के रविवार को 115वें एपिसोड में पीएम नरेंद्र मोदी ने सरदार पटेल और बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाने की बात कही। साथ ही उन्होंने डिजिटल अरेस्ट जैसे फ्रॉड से बचने के लिए तीन स्टेप रुको, सोचो और एक्शन लो अपनाने की बात कही। उन्होंने कहा- कॉल आते ही रुकें। घबराएं नहीं, शांत रहें, जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं, किसी को अपनी निजी जानकारी न दें। स्क्रीन शॉट लें और रिकॉर्डिंग जरूर करें। दूसरा चरण है- सोचो। कोई भी सरकारी एजेंसी फोन पर धमकी नहीं देती, वीडियो कॉल पर पूछताछ नहीं करती, न पैसे मांगती है। अगर ऐसा है तो समझिए कुछ गड़बड़ है। इसके बाद तीसरा चरण एक्शन लो

फॉलो करें। राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 डायल करें। पिछले महीने इस प्रोग्राम के 10 साल पूरे हुए हैं। इससे पहले शनिवार को पीएम मोदी के मन की बात पर एक किताब मोदी संवाद का विमोचन भी किया गया। एनिमेशन और वर्चुअल टूरिज्म पर एनिमेशन सेक्टर आज ऐसी इंडस्ट्री बन चुका है कि जो दूसरी इंडस्ट्रीज को ताकत दे रहा है। इन दिनों टूरिज्म बहुत फेमस हो रहा है। वर्चुअल टूर के जरिए अजंता की गुफाएं देख सकते हैं। कोणार्क मंदिर के कॉरिडोर में टहल सकते हैं, या फिर, वाराणसी के घाटों का आनंद ले सकते हैं। टूरिस्ट डेस्टिनेशन का टूर लोगों के मन में जिज्ञासा पैदा करता है। आज इस सेक्टर में एनिमेटर्स, स्टोरी टेलर्स, राइटर्स, वॉइस ओवर एक्सपर्ट्स, म्यूजिशियन और गेम डेवलपर्स की मांग बढ़ती जा रही है। इसलिए, देश के युवाओं से कहूंगा कि अपनी क्रिएटिविटी को विस्तार दें। छोटा भीम की तरह दूसरी एनिमेटेड सीरीज कृष्णा, मोटू-पतलू, बाल हनुमान के भी दुनियाभर में प्रशंसक हैं।

1 करोड़ रुपए की पड़ी एक चिंगारी

अवैध पटाखा बाजार में आग, 40 दुकानें खाक

गुना (नप्र)। सिरसी थाना क्षेत्र अंतर्गत मार की मऊ में शनिवार को हाट बाजार में अवैध पटाखा बाजार में आग लग गई। स्थानीय लोगों के अनुसार हादसे में बाजार में लगी 40 से ज्यादा पटाखा दुकानें, 7 बाइक व 2 ट्रैक्टर जलकर खाक हो गए। कस्बे में पूरा पटाखा बाजार सज गया था और पुलिस व प्रशासन को इसकी भनक तक नहीं लगी।

किसी भी दुकान के पास कोई लाइसेंस नहीं था इस पटाखा बाजार के पीछे ही खेत में हाट बाजार सजा हुआ था जिसमें सैकड़ों दुकानें थीं जो कपड़े की चादरों से बनाई गई थीं। यदि आग यहां तक पहुंच जाती तो बहुत बड़ी घटना हो सकती थी। दुकानदारों का कहना है कि घटना में करीब 1 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है।

जांच कराएंगे

एसडीएम और प्रशासनिक अमले को मौके पर भेजा है। यदि दुकानें बिना लाइसेंस के चल रही हैं तो इसकी जांच कराएंगे और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई होगी। - डॉ. सतेंद्र सिंह, कलेक्टर

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 28 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

लॉरेंस के भाई ने रची बाबा सिद्दीकी हत्याकांड की साजिश

मुंबई (एजेंसी)। एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या की साजिश गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के कनाडा में बैठे भाई अनमोल ने रची। रिपोर्ट के मुताबिक मुंबई क्राइम ब्रांच ने बताया, हत्याकांड के आरोपी रामफूल कंजोइया और नितिन सप्रे से पूछताछ के दौरान अनमोल की

साजिश रचने वाली बात सामने आई। अनमोल ने एक अन्य आरोपी सुजीत सुशील सिंह उर्फ डब्बू के जरिए हमले को अंजाम दिया। उसे शुक्रवार को लुधियाना से गिरफ्तार किया गया था। उसके पास से हथियार भी जब्त किया गया है। डब्बू ही अनमोल और शूटर्स के बीच का लिंक था। उसने राजस्थान से हथियारों का इंतजाम किया था।

इजरायल ने एक ही हमले में तोड़ी ईरानी सेना की कमर

तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायल और हमास के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। यह तनाव शनिवार को तब और भी ज्यादा बढ़ गया जब इजरायल की ओर से ईरान पर हमला बोला गया। इस हमले में ईरानी एयर डिफेंस के चार सैनिक मारे गए। इसके बावजूद ईरान इजरायल के हमले को कम करके दिखाने में लगा है लेकिन अब रिपोर्ट आई है कि इजरायल ने अपने हमले के

जरिए ईरान की बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम को बड़ा झटका दिया है। इजरायली वायुसेना ने एक दर्जन ऐसे ठिकानों पर हमला किया, जहां ईरान की बैलिस्टिक मिसाइलों के लिए ठोस ईंधन बनता था। इन्हीं मिसाइलों के जरिए ईरान इजरायल पर हमला करता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि आने वाले समय में इससे ईरान की मिसाइल उत्पादन क्षमता सीमित हो जाएगा।

झारखंड के बाद महाराष्ट्र में भी कांग्रेस की बढ़ी टेंशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर एक तरफ जहां महाविकास अघाड़ी में सीट शेयरिंग को लेकर भारी माथापच्ची हो रही है, तो दूसरी ओर सीटें कम होने के चलते कांग्रेस में टिकट बंटवारे से लेकर आंतरिक बगावत होने की संभावनाएं बढ़ गई है। यह कांग्रेस के लिए टेंशन इसलिए भी क्योंकि पार्टी के एक प्रत्याशी ने अपना

टिकट ही वापस कर दिया है। दरअसल, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर विपक्षी गठबंधन एमवीए के तहत एनसीपी, कांग्रेस और शिवसेना उद्धव गुट के बीच 85-85 सीटों का फॉर्म्यूला बना है और कांग्रेस पार्टी अब तक 3 लिस्ट जारी कर चुकी है, जिसमें कुल 87 नाम है। मतलब साफ है कि पार्टी अपने कोटे के सभी प्रत्याशी घोषित कर चुकी है।

चंद्रमा पर खोज के लिए अंतरिक्ष स्टेशन पर बनेगा लॉन्चिंग पैड

इसरो के चेयरमैन ने भारत के लैंडर तकनीक में महारत हासिल करने की घोषणा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत जल्द ही लैंडर टेक्नोलॉजी में महारत हासिल कर लेगा, साथ ही भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन को चंद्रमा पर खोज के लिए लॉन्चिंग प्वाइंट बनाने की भी तैयारी है।

यह बात भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के चेयरमैन डॉ. एस सोमनाथ ने कही। वह नई दिल्ली के रंग भवन में आकाशवाणी द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सरदार पटेल स्मारक व्याख्यान 2024 में 'भारतीय अंतरिक्ष यात्रा' नई सीमाओं की खोज' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। अपने व्याख्यान में, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सोमनाथ ने भारत के अंतरिक्ष विजन 2047 के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने चंद्रमा पर भारतीय लैंडिंग के मिशन के बारे में भी विस्तार से बाताया। डॉ. सोमनाथ ने चंद्रमा पर खोज के लिए लॉन्चिंग पॉइंट के रूप में भारतीय अंतरिक्ष अंतरिक्ष स्टेशन की अवधारणा को पेश करते हुए कहा, इसरो ने लैंडर तकनीक में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं। उन्होंने रियूजेबल रॉकेट के विकास के बारे में भी विस्तार से बात की और भविष्य की खोज की योजनाओं के बारे में बताया। इसमें चंद्रमा और मंगल पर सफल मिशनों के बाद शुक्र की कक्षा, सतह का अध्ययन करने के लिए मिशन शामिल थे। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष मिशनों के अलावा, इसरो प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और नेविगेशन में देश की अनुप्रयोग आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

भोपाल में आयोजित होगा देश का पहला राज्य स्तरीय प्री-सीओपी

- **मुख्यमंत्री डॉ. यादव होंगे शामिल**
- **जलवायु परामर्श में मध्यप्रदेश दिखाएगा अपनी अग्रणी भूमिका**

भोपाल (नप्र)। 'जलवायु परिवर्तन के लिये वैश्विक प्रयास-भारत की प्रतिबद्धता में राज्य का योगदान'' विषय पर भोपाल में 28 अक्टूबर 2024 को पहला राज्य-स्तरीय प्री-कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी) परामर्श आयोजित हो रहा है। कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर भोपाल में प्रातः10 बजे शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रमुख रूप से सहभागिता करेंगे। कार्यक्रम जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख लीडर्स को एक मंच पर लाने का प्रयास है। यह परामर्श अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान के तत्वावधान में मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद,नर्मदा समग्र, पब्लिक एडवोकेसी इनिशिएटिव फॉर राइट्स एंड वैल्यूज़ इन इंडिया और कम्युनिटी इकोनॉमिक्स एंड डेवलपमेंट कंसल्टेंट्स सोसाइटी के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का भोपाल में आयोजन क्लाइमेट चेंज के क्षेत्र में राज्य द्वारा लिया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परामर्श मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को एक साथ लाने के नवीन दृष्टिकोण को दर्शाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश वसुधैव कुटुम्बकम के विचार को समाहित करता है- जिसमें सारा विश्व एक परिवार है। यह आयोजन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के दृष्टिकोण के साथ मेल खाता है। इसका उद्देश्य साझा और समावेशी जलवायु समाधान को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम में 200 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्लाइमेट लीडर्स, शासकीय अधिकारी, पर्यावरण विशेषज्ञ और प्रतिनिधि शामिल होंगे। इस विमर्श के केंद्र में मध्यप्रदेश राज्य द्वारा किए जा रहे प्रयास रहेंगे, जो कि भारत के नेशनली डिटरमिन्ड कंट्रीब्यूशन और सतत विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में महती भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2025 का समय भारत की अपडेटेड एनडीसी प्रस्तुत करने के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। देश के सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक, मध्यप्रदेश ने अपने आर्थिक विकास को महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों के साथ जोड़ा है। देश के सबसे बड़े वन क्षेत्र और अद्वितीय पारिस्थितिकी संपदा के साथ, मध्यप्रदेश क्लाइमेट चेंज के प्रति एक्शन लेने के लिए तथा नेतृत्व करने के लिये अग्रणी है। यह सरकार की क्लाइमेट एक्शन और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्री-सीओपी विमर्श का उद्देश्य राज्य के प्रयासों को भारत की वैश्विक जलवायु प्रतिबद्धताओं के साथ जोड़ना है।

परामर्श के मुख्य विषय

- राष्ट्रीय और वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में राज्य स्तरीय प्रयासों को रेखांकित करना।
- सतत विकास और जलवायु संरक्षण में मध्यप्रदेश के नवाचारों को प्रदर्शित करना।
- बहु-हितधारकों के सहयोग के माध्यम से एनजीसी-एसडीजी संबंध को मजबूत करना।
- स्थानीय और प्रभावी क्लाइमेट एक्शन रणनीति को सीओपी 29 की रणनीति के साथ एकरूप बनाना।
- यह ऐतिहासिक कार्यक्रम मध्यप्रदेश को भारत के जलवायु प्रयासों के अग्रिम पंक्ति में खड़ा करेगा और देश के अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा।

जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने पर मोदी सरकार सहमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने पर सहमति बन गई है। वहीं, लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश बना रहेगा। नवंबर के आखिरी हफ्ते में शुरू होने वाले संसद के शीतकालीन सत्र में इससे जुड़ा प्रस्ताव लाया जाएगा। राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने 23 अक्टूबर को गृह मंत्री अमित शाह और 24 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की

थी। इस दौरान उमर ने पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का आग्रह किया था। उन्हें इसी साल राज्य का दर्जा बहाल करने का आश्वासन मिला था। साल 2019 में अनुच्छेद 370 और 35ए हटाते समय जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दो केंद्र शासित प्रदेश बनाए गए थे। सरकार ने उस समय ही राज्य के हालात सामान्य होने पर पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का भरोसा दिया था। हालिया राज्य विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने इसे दोहराया था। चुनाव के बाद गठित सरकार की पहली कैबिनेट मीटिंग में राज्य का दर्जा बहाल करने का प्रस्ताव पास करके उप-राज्यपाल (एलजी) को भेजा गया था।

राजस्थान की 7 सीटों पर बीजेपी ने रचा 'चक्रव्यूह'

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव को लेकर बीजेपी ने 'खास प्लान' तैयार कर लिया है। इस प्लान के चलते बीजेपी ने सातों विधानसभा सीटों पर 'चक्रव्यूह' तैयार किया है। बीजेपी इन सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवार को घेरने के लिए अपनी रणनीति को क्रियान्वित करने का प्रयास करेगी। इसके तहत राजस्थान के मुख्यमंत्री, डिप्टी सीएम सहित 12 मंत्री और 34 नेताओं ने अपना मोर्चा संभाल लिया है। इधर, बीजेपी सातों सीटों में से अधिक से अधिक सीटों पर अपना कब्जा जमाने के लिए बेताब है। बीजेपी की सोशल मीडिया टीम भी एक्टिव होकर अपने मिशन में जुट गई है। देवली उनियारा विधानसभा सीट पर बीजेपी की तरफ से पूर्व विधायक राजेंद्र गुर्जर उम्मीदवार है। इसको लेकर पार्टी ने जलदाय मंत्री कन्हैया लाल चैधरी, जिला प्रभारी मंत्री हीरालाल नागर को नियुक्त किया है। इसी तरह सांसद दामोदर अग्रवाल, बंशीलाल खटीक को चुनावी रणनीति को लेकर जिम्मेदारी सौंप गई है। रामगढ़ सीट के लिए बीजेपी ने अपने दो मंत्रियों को जिम्मेदारी सौंपी है, इनमें सहकारिता मंत्री गौतम दक और गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म शामिल है। इसके अलावा बीजेपी के प्रदेश मंत्री महेंद्र कुमावत, मुकेश गोयल को भी रामगढ़ विधानसभा की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

- **कांग्रेस की शिकस्त के लिए हर सीट पर लगाए 2 महारथी**
- **प्रमुख नेताओं को सौंपी जिम्मेदारी, जमीनी स्तर पर काम भी**

'लव ट्रैप' और नौकरी छोड़ने के लिए बनाया जा रहा दबाव

- **बांग्लादेश में हिंदुओं को बदनाम और परेशान करने के लिए कट्टरपंथियों की नई साजिश**

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय एक नई तरह की मुश्किल का सामना कर रहा है। पहले जहां सीधे हमले या हिंसा देखने को मिलती थी, वहीं अब उनके साथ भेदभाव और धमकियों का सिलसिला शुरू हो गया है। कट्टरपंथी संगठन उन्हें सामाजिक बहिष्कार, बदनामी और अन्यायपूर्ण रवैये के जरिए निशाना बना रहे हैं। धार्मिक भेदभाव की इस नई लहर ने देश के हिंदू समुदाय में डर और असुरक्षा की भावना पैदा कर दी है। दूसरी तरफ कट्टरपंथी संगठनों ने हाल ही में हिंदुओं को बदनाम करने के लिए कथित तौर पर नया अभियान शुरू कर दिया। इस

अभियान का नाम 'लव ट्रैप' है। इस अभियान में वे झूठा आरोप लगाते हुए अफवाह फैला रहे हैं कि हिंदू पुरुष मुस्लिम महिलाओं को लुभाकर उनका धर्म परिवर्तन करा रहे हैं। बांग्लादेश के कई इलाकों में इस मुद्दे पर पोस्टर लगाए गए हैं, जिसमें मुस्लिम महिलाओं से सावधानी बरतने की अपील की गई है। इस तरह का अभियान धार्मिक तनाव को और बढ़ावा दे रहा है और हिंदू-मुस्लिम रिश्तों में दरार पैदा करने की कोशिश कर रहा है।

महाराष्ट्र चुनाव से पहले जयशंकर ने चला 'विदेशी निवेश' का दांव

कहा-विदेशी निवेश के लिए राज्यों में बेहतर प्रदर्शन वाली सरकार की है जरूरत

विदेश मंत्री ने कहा-केंद्र सरकार के साथ तालमेल से बढ़ता है निवेशकों का भरोसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री जयशंकर ने दीवाली से पहले मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में विकास कार्यों की रफ्तार का जिक्र किया। विदेश मंत्री ने कहा कि विकसित भारत के लिए विकसित महाराष्ट्र की जरूरत है। जयशंकर ने कहा कि आजादी के बाद से इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में महाराष्ट्र का योगदान सबसे अधिक रहा है।

विदेश मंत्री ने जर्मनी के चांसलर की भारत यात्रा और पीएम मोदी के सिंगापुर दौरे, जी-7 मीटिंग, अमेरिका दौरे का जिक्र किया। विदेश मंत्री ने कहा कि सरकार का पूरा फोकस भारत में निवेश लाने पर है। जयशंकर ने डबल इंजन की सरकार का जिक्र कर महाराष्ट्र चुनाव में बीजेपी सरकार लाने की भी पैरवी भी कर दी। विदेश मंत्री ने अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग इंडस्ट्रियल पॉलिसी से जुड़े सवाल का जवाब दिया। महाराष्ट्र की दुनिया में छवि भी बनेगी। जयशंकर ने कहा कि विदेशी निवेशकों का महाराष्ट्र में बहुत रुचि होती है। ऐसे में महाराष्ट्र में ऐसी सरकार की जरूरत है जो केंद्र के साथ मिलकर नीतियों की समानता के साथ प्रोजेक्ट को जमीन पर उतार सके।

जयशंकर बोले-

चीन बॉर्डर पर तनाव कम करना होगा अगला स्टेप

मुंबई (एजेंसी)। भारत-चीन के बीच एलएसी पर पेट्रोलिंग को लेकर हुए समझौते पर विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि सैनिकों की वापसी पहला कदम है। अगला कदम तनाव कम करना है। मुंबई में रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में विदेश मंत्री ने कहा- दोनों देशों के बीच तनाव तभी कम होगा, जब भारत को यकीन न हो जाए कि चीन भी ऐसा ही चाह रहा है। तनाव कम करने के बाद, बॉर्डर को कैसे मैनेज किया जाए, इस पर चर्चा की जाएगी। एक दिन पहले शनिवार को पुणे में एक कार्यक्रम में जयशंकर ने कहा था कि भारत सरकार का अपनी बात पर अड़े रहना काम कर गया। आज हम जिस मुकाम पर पहुंचे हैं, उसके दो कारण हैं। पहला- हम अपनी बात से पीछे नहीं हटे, यह केवल इसलिए संभव हो सका क्योंकि सेना देश की रक्षा के लिए हर मौके पर डटी रही और कूटनीति ने अपना काम किया। दूसरा- पिछले एक दशक में हमने अपने बुनियादी ढांचे में भी सुधार किया है।

जयशंकर ने कहा- मुझे लगता है कि इन दो कारणों के चलते भारत-चीन सीमा विवाद पर पेट्रोलिंग का मुद्दा हल हो सका है। दरअसल, भारत-चीन के बीच पूर्वी लद्दाख में चार साल से सीमा विवाद को लेकर तनाव था। दो साल की लंबी बातचीत के बाद पिछले दिनों एक समझौता हुआ है। दोनों सेनाएं विवादित पॉइंट्स देपसांग और डेमचोक से पीछे हटेंगी।

सीजेआई बोले-वे न्यायपालिका के लिए बजट देते हैं

सरकार के प्रमुख से मिलना कोई डील होना नहीं है

कहा-अगर लेटर पर ही निर्भर रहेंगे तो काम नहीं होगा

पुणे (एजेंसी)। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा है कि सरकार के प्रमुख जब हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस से मिलते हैं तो इन मुलाकातों में राजनीतिक परिपक्वता होती है। मुंबई के एक कार्यक्रम में सीजेआई ने कहा- हम राज्य या केंद्र सरकार के मुखिया से मिलते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई डील हो गई। चीफ जस्टिस ने ये भी कहा कि हमें राज्य के सीएम के साथ बातचीत करनी होती है, क्योंकि वे न्यायपालिका के लिए बजट देते हैं। यदि मुलाकात न करके केवल लेटर्स पर निर्भर रहें तो काम नहीं होगा। ये मीटिंग पॉलिटिकल मेच्योरिटी का एक साइन है। मेरे करियर में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी पीएम ने कभी भी मुलाकात के दौरान किसी लंबित केस के बारे में कुछ कहा हो। सीजेआई ने कहा- कोर्ट और सरकार के बीच का एडमिनिस्ट्रेटिव रिलेशन, ज्यूडिशियरी के काम से अलग है। पीएम या चीफ जस्टिस त्योहारों या शोक में एक-दूसरे से मिलते हैं। यह हमारे काम पर कोई असर नहीं डालता। अदालतों में छुट्टियों को लेकर उठने वाले सवालों पर सीजेआई ने कहा- लोगों को यह

समझना चाहिए कि जजों पर काम का बहुत बोझ है। उन्हें सोचने-विचारने का भी समय चाहिए होता है, क्योंकि उनके फैसले समाज का भविष्य तय करते हैं। मैं खुद रात 3.30 बजे उठता हूं और सुबह 6.00 बजे से अपना काम शुरू कर देता हूं। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट एक साल में 181 केस निपटाता है, जबकि भारतीय सुप्रीम कोर्ट में इतने केस तो एक ही दिन में निपटाए जाते हैं। हमारा सुप्रीम कोर्ट हर साल 50,000 केस निपटाता है। **कोलेजियम की जिम्मेदारी राज्य-केंद्र और ज्यूडिशियरी में बंटी-** कॉलेजियम सिस्टम एक यूनियन सिस्टम है, जहां जिम्मेदारियां अलग-अलग लेवल पर केंद्र सरकार, राज्य सरकार और ज्यूडिशियरी में बंटी हैं। इसमें आम सहमति बनती है, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है जब सहमति नहीं बन पाती। ऐसे में ज्यूडिशियरी के अलग अलग लेवल पर और सरकारों के अलग-अलग लेवल पर मेच्योरिटी के साथ निपटाया जाता है। मैं चाहता हूं कि हम एक आम सहमति बनाने में सक्षम हों। हर संस्थान में सुधार किया जा सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इसमें बुनियादी तौर पर कुछ गड़बड़ है। जिस संस्था को हमने ही बनाया है, उसकी आलोचना करना बहुत आसान है।

हर संस्था में बेहतरी का स्कोप होता है, लेकिन हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि बुनियादी तौर पर कुछ गड़बड़ है। ये संस्थाएं 75 साल से चल रही हैं। हमें डेमोक्रेटिक गवर्नेंस के हमारे सिस्टम पर भरोसा करना चाहिए, ज्यूडिशियरी भी इसी का एक भाग है। सोशल मीडिया के कारण फैसला सुनाने में पूरी दुनिया की न्यायपालिकाओं में बदलाव आया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने चित्रकूट में कामदगिरी परिक्रमा के दौरान बच्चों को खिलौने दिलवाए और यूपीआई से भुगतान किया।

भोपाल में रिटायर्ड डीजीपी के बेटे ने अपना गला काटा

- सुसाइड से पहले कलाई की नस काटी; 2 साल से डिप्रेशन में थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कमला नगर में रहने वाले छत्तीसगढ़ के रिटायर्ड पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) मोहन शुक्ला के 54 साल के बेटे ने शनिवार शाम आत्महत्या कर ली। तुषार शुक्ला ने ब्लेड से खुद का गला और कलाई की नस काट ली। परिजन उन्हें गंभीर हालत में हजेला अस्पताल लेकर पहुंचे। अस्पताल पहुंचने से पहले ही मौत हो गई। वे करीब दो साल से डिप्रेशन में थे। इसका इलाज भी चल रहा था। पुलिस का कहना है कि परिवार के बयान लिए जाएंगे। रात में बयान नहीं हो सके। जिस ब्लेड से तुषार ने गला और कलाई की नस काटी, वो भी बरामद नहीं हो सका है।

पत्नी - बेटा अस्पताल लेकर पहुंचे

पुलिस के मुताबिक, रिटायर्ड डीजीपी परिवार के साथ कमलानगर के वैशाली नगर में रहते हैं। तुषार शादीशुदा थे। उनका एक बेटा है। शनिवार शाम 5.30 बजे उन्होंने अपने कमरे में ब्लेड से हाथ की नस काट ली। जब उन्हें लगा कि हाथ की नस काटने से जान नहीं जाएगी, तो ब्लेड से अपना गला रेत दिया। गला कटते ही अधिक मात्रा में खून बहने लगा। पत्नी सौम्या शुक्ला की नजर पड़ते ही उन्होंने शोर मचा दिया। पत्नी और बेटा लहूलुहान हालत में तुषार शुक्ला को हेजला अस्पताल लेकर पहुंचे। यहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

करंट लगने से लाइनमैन की मौत

15 मिनट तक खंभे और सीढ़ी के बीच लटका रहा शव; बिजली कंपनी पर लापरवाही का आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल के परवलिया थाना इलाके में स्थित रक्षा बिहार (डिफेंस) कॉलोनी में बिजली लाइन में खराबी की सूचना पर पहुंचे लाइनमैन की करंट लगने से मौत हो गई। उसका शव खंभे और सीढ़ी के बीच करीब 15 मिनट तक लटका रहा। किसी तरह से साथियों ने शव को उतारा और अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने भी चेक करने के बाद मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, पप्पू मीणा पिता बदामीलाल मीणा (21) झापड़िया गांव थाना परवलिया क्षेत्र में रहता था। बिजली विभाग में आउटसोर्स कर्मचारी था और बतौर लाइन मैन काम कर रहा था। बिजली खराबी की सूचना पर शनिवार की शाम को रक्षा बिहार कॉलोनी में तीन अन्य साथियों के साथ गया था। खंभे पर चढ़कर काम करते 11 केबी की लाइन से उसके हाथ में जोरदार शॉक लगा। इससे वहीं उसकी मौत हो गई।

साथियों ने लापरवाही के लगाए आरोप: पप्पू के दोस्त पवन सिंह धाकड़ ने बताया कि, पप्पू को बिना किसी सुरक्षा उपकरण के 11 केबी की लाइन पर बिजली फॉल्ट सुधारने के लिए चढ़ा दिया गया था। बिजली कंपनी की लापरवाही के कारण उसकी जान गई है।

एमपी कांग्रेस की 177 सदस्यीय कार्यकारिणी घोषित

जीतू पटवारी की टीम में दिग्विजय के बेटे समेत 17 उपाध्यक्ष, नकुलनाथ शामिल नहीं; 11 प्रतिशत महिलाएं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश कांग्रेस की 177 सदस्यीय कार्यकारिणी की घोषणा की गई है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालने के करीब 10 महीने बाद घोषित जीतू पटवारी की इस टीम में 17 उपाध्यक्ष, 71 महासचिव, 16 कार्यकारिणी सदस्य, 33 स्थाई आमंत्रित सदस्य और 40 विशेष आमंत्रित सदस्य बनाए गए हैं। खास बात ये है कि पूर्व सीएम कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, कांतिलाल भूरिया, अरुण यादव और विवेक तन्खा जैसे सीनियर लीडर्स को कार्यकारी सदस्य बनाया गया है। जीतू पटवारी के टीम में दिग्विजय सिंह के बेटे जयवर्धन सिंह को उपाध्यक्ष बनाया गया है। लेकिन कार्यकारिणी में कमलनाथ के बेटे और पूर्व सांसद नकुलनाथ का नाम नहीं है।

केवल 11 फीसदी महिलाओं को टीम में मिली जगह

जीतू पटवारी की इस टीम में 20 महिलाओं को जगह दी गई है। जो कार्यकारिणी के कुल 177 सदस्यों का करीब 11 प्रतिशत ही है। इनमें 2 उपाध्यक्ष, 12 महासचिव, 1 कार्यकारी सदस्य, 2 स्थाई आमंत्रित सदस्य और 3 विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल हैं।

कमलनाथ, दिग्विजय कार्यकारी सदस्यों में शामिल

16 कार्यकारी सदस्यों में सीनियर नेताओं को जगह दी गई है। इस टीम में पूर्व सीएम कमलनाथ, पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव, पूर्व नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह, पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह, राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा, पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन, पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल, पूर्व मंत्री ओमकार मरकाम, पूर्व विधायक सत्यनारायण पटेल, पूर्व विधायक निलांशु चतुर्वेदी, पूर्व विधायक कुणाल चौधरी, मनोज चौहान और भूपेन्द्र मरावी शामिल है।

पटवारी की टीम में कमलनाथ का दबदबा नजर आया

जीतू पटवारी की टीम में पूर्व सीएम कमलनाथ का दबदबा नजर आया है। कांग्रेस की प्रदेश कार्यकारिणी में बनाए गए 17 उपाध्यक्षों में कमलनाथ के 7 और दिग्विजय सिंह के 5 करीबी हैं। महामंत्रियों की बात करें तो 71 में से 23 महासचिव कमलनाथ के करीबी हैं। 17 महासचिव दिग्विजय के करीबी माने जाते हैं।

दिग्विजय के बेटे उपाध्यक्ष, कमलनाथ के बेटे को जगह नहीं

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के बेटे और कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह को प्रदेश कांग्रेस का उपाध्यक्ष बनाया गया है। वहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया के बेटे विक्रांत भूरिया महासचिव बनाया गया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव कार्यकारी सदस्य और उनके भाई सचिन यादव को उपाध्यक्ष बनाया गया है। वहीं कार्यकारिणी में कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ का कहीं नाम नहीं है।

पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा फ्रंट लाइन से बाहर

पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा को एमपी कांग्रेस में स्थाई आमंत्रित सदस्य बनाया है। सूत्रों की मानें तो लोकसभा चुनाव के पहले कमलनाथ के बीजेपी में शामिल होने को लेकर की गई बयानबाजी को लेकर सज्जन सिंह वर्मा को उपाध्यक्ष और महामंत्रियों की लिस्ट से बाहर रखा गया है।

प्रमोद टंडन ने ठुकराया विशेष आमंत्रित सदस्य का पद

इंदौर कांग्रेस के नेता प्रमोद टंडन ने पीसीसी की कार्यकारिणी घोषित होने के बाद बागी तेवर दिखाए हैं। उन्होंने पत्र लिखा है कि नव गठित मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी में मुझे विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में जबाबदारी दी है, जिसे मैं आभार के साथ अस्वीकार करता हूं।

भोपाल ऐसी राजधानी, जहां घूमते मिल जाएंगे टाइगर

ब्रॉडिंग के लिए क्रेडाई का ऑनलाइन सर्वे; सरकार को सौंपेंगे रिपोर्ट

भोपाल (नप्र)। भोपाल ऐसी राजधानी है, जहां टाइगर सड़कों पर घूमते मिल जाएंगे। राजा भोज ने शहर को बसाया। भीमबेटका से लेकर श्यामला हिल्स तक रॉक पेंटिंग यानी, शैल चित्र मिलते हैं, जो पाषाणकाल की मानी जाती है। इसका मतलब ये है कि भोपाल 30 हजार साल से रहने लायक जगह है। यह कहना है क्रेडाई (कॉन्फेडरेशन ऑफ रियल एस्टेट डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के अध्यक्ष मनोज मीक का। वे भोपाल को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए ऑनलाइन सर्वे करवा रहे हैं। उन्होंने बताया, अब तक सैकड़ों लोग सुझाव दे चुके हैं।

मुख्य सचिव से मुलाकात के बाद सर्वे, रिपोर्ट सौपेंगे: मनोज मीक ने बताया, भोपाल की कई खूबियां हैं। यहां टाइगर है। शहर के बीचोंबीच नेशनल पार्क है। पास में रातापानी अभयारण्य है। 30 हजार ईसा पूर्व से रहने योग्य स्थान और इसके प्रमाणिक पाषाण कालीन शैल चित्र भी मिल चुके हैं। वहीं, 1010 ईसवीं में राजा भोज का बसाया शहर है। भारत का सबसे बड़ा लैंड लॉक क्षेत्र, लार्जेस्ट अर्बन फुट प्रिंट्स भी मिले हैं। बावजूद भोपाल को वैश्विक पहचान नहीं मिल पाई है। इसलिए अब इसे ग्लोबल स्टेज पर ले जा सकते हैं। भोपाल के आसपास 20 से अधिक टाइगर का बसेरा है। वहीं, राजधानी के बीचों-बीच वन विहार नेशनल पार्क भी है। मनोज मीक ने हाल ही में क्रेडाई ने मुख्य सचिव अनुराग जैन से मुलाकात की थी। इस दौरान सकारात्मक चर्चा हुई। इससे प्रेरित होकर यह ऑनलाइन सर्वे शुरू किया गया है। इस सर्वे का मकसद यह जानना है कि कौन-सी विशेषता भोपाल को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला सकती है। इसमें शहर के तीन मुख्य पहलुओं पर वोट करने का अवसर दिया जा रहा है।

सर्वे के बाद रिपोर्ट देंगे, ताकि ब्रॉन्डिंग हो सके: भोपाल की आबादी 30 लाख से अधिक है। अध्यक्ष मीक ने बताया, इस जनसंख्या के आधार पर सर्वे के सटीक और भरोसेमंद परिणाम पाने के लिए जितनी प्रतिक्रियाएं आवश्यक मानी जाती हैं। सर्वे को उससे अधिक रिस्पॉन्स मिला है। यह पर्याप्त डेटा संग्रह है। भोपाल के बड़े और विविध जन समूह की राय को सही तरीके से दर्शा सकता है। आयोजक और अधिक समर्थन के पक्षधर हैं। इसलिए पोलिंग अभी जारी रहेगी।

मजबूत ब्रॉन्डिंग से पहचान मिलेगी: क्रेडाई का उद्देश्य जनता की राय के आधार पर राजधानी भोपाल की एक मजबूत ब्रांड पहचान तैयार करना है, जो लॉजिस्टिक, पर्यटन, निवेश और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भोपाल की पहचान को बढ़ावा दे सके। अध्यक्ष मीक ने कहा कि यह सिर्फ एक सर्वेक्षण नहीं है, बल्कि हर जागरूक नागरिक के पास भोपाल की वैश्विक पहचान को आकार देने का मौका है। हम अपनी राजधानी के उत्कृष्ट विकास के लिए निरंतर प्रद करते रहेंगे।

- 30,000 ईसा पूर्व से रहने योग्य स्थान, प्रमाणिक पाषाण कालीन शैल चित्र।
- 1010 ईस्वी में राजा भोज द्वारा स्थापत्य पर स्थापित ऐतिहासिक नगर योजना।
- भारत का सबसे बड़ा लैंड लॉक क्षेत्र, लार्जेस्ट अर्बन फुटप्रिंट्स।
- भोपाल के पास भोजपुर मंदिर है। यहां दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग है।

भोपाल के लिए यह खास: यहां रामसर साइट- देश में कुल 42 रामसर साइट है। मध्य प्रदेश में सिर्फ भोजताल इस लिस्ट में शामिल है। अपनी बायोडायवर्सिटी के कारण भोज वेटलैंड को 2002 में रामसर साइट का दर्जा प्राप्त हुआ। यदि यहां जलीय जीव-जंतुओं और पौधों आदि की गिनती की जाए तो उनकी संख्या 805 है।

टाइगर और नेशनल पार्क- भोपाल देश की पहली ऐसी राजधानी है, जहां बीचों-बीच नेशनल पार्क है। वहीं, शहर में टाइगर का मूवमेंट रहता है। कई दशक गुजरने के बावजूद अब तक इंसान और टाइगर का आमना-सामना नहीं हुआ है।

बड़ा तालाब- भोपाल को झीलों का शहर भी कहा जाता है। बड़ा तालाब समेत कई तालाब है। इससे भूजल स्तर बेहतर रहता है।

आसपास कई ऐतिहासिक स्थल-

भोपाल के आसपास दो यूनेस्को साइट्स है। पहली भीमबेटका और दूसरी सांची स्तूप। इसके अलावा भोजपुर स्थित मंदिर। जहां दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग है। यही सभी बातें भोपाल को खास बनाती है।

राम मंदिर परिसर में तीन भाइयों ने नमाज पढ़ी, एफआईआर

पुजारी ने कहा-बाहर रखे मटके के पानी से हाथ-पैर धोए और जबरन घुस आए

शाजापुर/अकोदिया (नप्र)। शाजापुर के गुलाना अंतर्गत राम मंदिर परिसर में तीन भाइयों ने नमाज पढ़ी। मंदिर के पुजारी ने उन्हें रोका लेकिन वे नहीं माने। लोगों की तीखी प्रतिक्रिया के बाद पुलिस ने पुजारी की शिकायत पर तीनों भाइयों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। मामला सलसलाई थाना क्षेत्र के किलोदा गांव का है। पुजारी ओमप्रकाश शर्मा ने बताया, शनिवार शाम करीब 5.45 बजे गांव के बाबू खां (70), रुस्तम खां (65) और अकबर खां (85) आए। तीनों भाइयों ने मंदिर के दरवाजे पर रखे मटके के पानी से हाथ-पैर धोए और परिसर में बैठकर नमाज पढ़ने लगे।

धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का केस दर्ज

सलसलाई थाना प्रभारी जनक सिंह रावत ने बताया- बाबू खां, रुस्तम खां और अकबर खां के खिलाफ धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का केस दर्ज किया गया है। पुलिस मामले की जांच कर आगे की कार्रवाई करेगी।

थाने में मानी गलती, केस दर्ज

थाना प्रभारी जनक सिंह रावत ने कहा, किलोदा के श्री राम मंदिर के पुजारी सहित अन्य ग्रामीणों ने धार्मिक भावनाएं आहत होने की शिकायत की थी। इस पर तीनों भाइयों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। तीनों को थाने बुलाया गया था। यहां उन्होंने अपनी गलती स्वीकार कर ली। रावत ने कहा- यूनियन बैंक की किलोदा शाखा मंदिर के बाजू में है। ये तीनों जब बैंक से निकले तो नमाज का समय हो गया था। इस पर उन्होंने परिसर में ही नमाज पढ़ी। तीनों भाई यहां करीब 20 मिनट तक रुके। पुजारी और लोगों के विरोध के बाद वहां से चले गए।

कोर्ट करेगा जमानत-ट्रायल का फैसला

फिलहाल, तीनों भाइयों को थाने से नोटिस देकर छोड़ दिया गया है। मामला सात साल से कम की सजा का है इसीलिए जिस दिन चालान पेश होगा, उस दिन तीनों को कोर्ट में पेश होना पड़ेगा। जमानत या ट्रायल का फैसला कोर्ट में ही होगा। इलाके में तनाव की स्थिति नहीं है, न ही कोई फोर्स तैनात किया है।

भोपाल-इंदौर में पारा लुढ़का; पचमढ़ी सबसे ठंडा

धनतेरस पर बूंदाबांदी का अलर्ट ; अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में ठंड, 10 साल से यही ट्रेंड

भोपाल (नप्र)। अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में मध्यप्रदेश में ठंड का असर बढ़ जाता है। पिछले 10 साल से यही ट्रेंड है। इस बार भी ऐसा ही मौसम है। भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत कई शहरों में रात का टेम्प्रेचर 17 डिग्री सेल्सियस से नीचे पहुंच गया है। वहीं, हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा है। यहां दिन और रात दोनों ही ठंडे हैं। भोपाल में यह 10 में से 5 साल का सबसे ज्यादा ठंडा मौसम है। अक्टूबर के महीने में बारिश, गर्मी और ठंड का असर रहता है। इस बार 15 अक्टूबर को मानसून की विदाई हो गई। वहीं, लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र), साइक्लोनिक सकुर्लेशन सिस्टम की वजह से 23 अक्टूबर तक बारिश का दौर चला।

चेंज ओवर पीरियड, इसलिए ऐसा मौसम: मौसम विभाग के अनुसार, अक्टूबर का महीना चेंज ओवर पीरियड रहता है। मानसून विदाई पर होता है। आसमान साफ हो जाता है। इस कारण दिन में गर्मी और रात में ठंड पड़ती है। उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ एक्टिव होने से बारिश होती है। इस बार 23 अक्टूबर के बाद बारिश थमी और ठंड का असर बढ़ गया। अक्टूबर की आखिरी 5 रातें और ठंडी होंगी।

अभी इतना पहुंचा रात का टेम्प्रेचर: फिलहाल, मौसम के दो रंग देखने को मिल रहे हैं। अधिकांश शहरों में दिन में तेज धूप निकल रही है तो रातें ठंडी हो गई हैं। शुक्रवार-शनिवार की रात की बात करें तो धार, गुना, खंडवा, खरगोन, रायसेन, राजगढ़, रतलाम, छिंदवाड़ा, मंडला, नरसिंहपुर, नौगांव, रीवा, सागर, सिवनी, टीकमगढ़, उमरिया और मलाजखंड में पारा 20 डिग्री सेल्सियस से कम रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 15.2 डिग्री, इंदौर में 17.7 डिग्री, ग्वालियर में 18.3 डिग्री, उज्जैन में 18 डिग्री और जबलपुर में पारा 19.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इधर, दिन के तापमान में बढ़ोतरी देखने को मिली। शनिवार को ज्यादातर शहरों में दिन का तापमान 30 डिग्री के पार रहा। पचमढ़ी में रात का टेम्प्रेचर 15 डिग्री जबकि दिन का तापमान 27 डिग्री पर रहा।

तूफान 'दाना' का असर दिखेगा

प्रदेश में इस बार दिवाली पर मौसम बदला रह सकता है, खासकर धनतेरस वाले दिन। मौसम विभाग ने 29 और 30 अक्टूबर को राज्य के पूर्वी हिस्से यानी जबलपुर, शहडोल, रीवा और सागर संभाग के जिलों में बूंदाबांदी का अलर्ट जारी किया है। 29 अक्टूबर को ही धनतेरस है।

इन जिलों में रहेगा तूफान का असर

29 और 30 अक्टूबर को उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में हल्की बारिश और गरज-चमक की स्थिति बनी रहेगी। वहीं, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर समेत अन्य जिलों में तेज धूप निकली रहेगी।

भोपाल में 10-14 साल के राइडर्स ने दिखाया दम

नेशनल सुपरक्रॉस चैंपियनशिप में 80 प्रतिभागी शामिल; बोले- यहां का ट्रैक मुश्किल और चैलेंजिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल में रविवार को गांधी नगर के फादर एंजिल स्कूल के सामने ग्राउंड में नेशनल सुपर क्रॉस चैंपियनशिप शुरू हो गई। एसएक्स-1 क्लास में राइडर्स ने दम दिखाए। गॉड स्पीड रेसिंग एसोसिएशन और भोपाल मोटर स्पोर्ट्स की ओर से आयोजित इस चैंपियनशिप में 80 से ज्यादा राइडर्स ने हिस्सा लिया। यह एफएमएससीआई नेशनल सुपर क्रॉस चैम्पियनशिप का तीसरा राउंड है। यहां 10 से 14 साल एज ग्रुप के राइडर्स ने भी अपना कमाल दिखाया। इससे पहले इसका पहला और दूसरा राउंड नासिक और कोयंबटूर में हो चुका है। अगले राउंड पंचगनी, कोच्चि और बेंगलुरु में आयोजित होंगे। प्रतिभागियों का कहना है कि यहां का ट्रैक काफी मुश्किल और चैलेंजिंग था।

आकर्षण का केंद्र रहे 10 साल के राइडर्स: नेशनल सुपर क्रॉस चैंपियनशिप का यह इवेंट 10 क्लासेज में हो गया है। इसमें 10 से 14 साल के राइडर्स आकर्षण का केंद्र रहे।

गिरने के कारण परफॉर्म नहीं कर पाई 14 साल की अलीना: बेंगलुरु से आई जूनियर क्लास एसएक्स फोर में परफॉर्म करने वाली 14 साल की अलीना ने बताया कि, नेशनल सुपर क्रॉस चैंपियनशिप के तीसरे राउंड में गिरने की वजह से सही परफॉर्म नहीं कर पाई। उन्होंने बताया कि मुझे परिवार के सभी लोग इस खेल के लिए प्रेरित करते हैं और बहुत सपोर्ट करते हैं। मैं वीकेंडस में ही प्रैक्टिस कर पाती हूं। अलीना 9वीं की छात्रा हैं।

भोपाल के तालिब को थर्ड पोजिशन

प्राइवेट एक्सपर्ट क्लास में थर्ड पोजिशन पाने वाले भोपाल के मोहम्मद तालिब ने बताया कि, मैं लंबे समय से भोपाल में परफॉर्म कर रहा हूं। मैं करीब सात साल से गाड़ी चला रहा हूं, मुझे शहर के कुछ अनुभवी राइडर्स मोहम्मद आसिफ, मोहम्मद अनीस और मुजफ्फर अली ने ट्रेंड किया है।

संपादकीय

कब प्रदूषण मुक्त होगी दिल्ली?

दिवाली आते ही देश की राजधानी दिल्ली फिर प्रदूषण और जहरीली हवा में घिरने लगी है। अफसोस इस बात का है कि इस प्रदूषण को कम करने, उसे नियंत्रित करने की जगह दिल्ली के राजनेता केवल सियासत करने में लगे हैं। प्रदूषण के विपक्षी सरकारों को जिम्मेदार ठहराने में वक्त गंवाया जा रहा है। परेशान दिल्ली की जनता हो रही है। जिस यमुना के किनारे दिल्ली बसी है, वहां जहरीला सफेद झाग निकल रहा है। दिल्ली में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर काम करने वाले सीएक्यूएम यानी 'द कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट' के अनुसार दिल्ली में पूरे साल प्रदूषण होता है, लेकिन यह सर्दियों में ज़्यादा नज़र आता है। क्योंकि कम तापमान, हवा नहीं चलने और बारिश नहीं होने से प्रदूषण करने वाले कण ज़मीन की सतह के क़रीब काफ़ी कम इलाक़े में जमा हो जाते हैं। पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्था ग्रीनपीस की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत की राजधानी दिल्ली दुनियाभर में सभी देशों की राजधानी में सबसे ज़्यादा प्रदूषित शहर है। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के मुताबिक़ दुनिया के 30 सबसे ज़्यादा प्रदूषित शहर भारत में हैं। यूं कहने को राज्य सरकार प्रदूषण नियंत्रण के उपाय कर रही है। एनसीआर में इसी सप्ताह ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) स्टेज 2 या ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान लागू करना पड़ा था। ग्रैप के दूसरे चरण के तहत, कोयले और जलाऊ लकड़ी के उपयोग और डीजल जनरेटर सेट (आपातकालीन और आवश्यक सेवाओं को छोड़कर) पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। ग्रैप दिल्ली और आस-पास के इलाकों में वायु प्रदूषण से लड़ने के उपायों का एक समूह है, जो स्थिति के आधार पर होता है। इस बीच सभी विभागों को निर्देश दिए हैं कि सभी एजेंसियों के साथ मिलकर दिल्ली में ग्रैप-2 के नियमों को लागू करें, चाहे धूल प्रदूषण हो, वाहन प्रदूषण हो या बायोमास बर्निंग से होने वाला प्रदूषण हो, हम सभी इलाकों में ग्राउंड ड्यूटी कर रहे हैं। जनता के बीच रेड लाइट ऑन, गाड़ी ऑफ का जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। लेकिन उसका कुछ नतीजा नहीं निकल रहा है। दिल्ली और आसपास के राज्यों में पराली जलाना एक कारण है, लेकिन शहर में बेतहाशा वाहन और कारखाने जो जहरीला धुआं छोड़ रहे हैं, उस पर कोई नियंत्रण नहीं है। प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण के उपाय लागू करने की जगह तमाम राजनीतिक पार्टियां प्रदूषण के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करने में वक्त जाया कर रही हैं। राज्य में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी की सरकार पोल्यूशन के लिए पड़ोसी और भाजपा शासित हरियाणा व यूपी को दोषी मान रही हैं, लेकिन पंजाब पर चुप है, क्योंकि इस राज्य में आप की सरकार है। फर्क इतना इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस अब प्रदूषण के लिए आप को ही जिम्मेदार ठहरा रही है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण में चौतरफा फेल 'आप' की दिल्ली सरकार घोषणा करने, अधिकारियों की तैनाती करने, ड्रोन द्वारा निगरानी रखने जैसे काम तो कर रही है परंतु प्रदूषण को पूरी तरह कैसे नियंत्रित किया जाए, इस पर किसी भी तरह से ध्यान नही दिया जा रहा है. उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता दिल्ली में प्रदूषण कम होने का इंतजार कर रही है, जबकि सरकार प्रदूषण के 13 हॉटस्पॉट गिनाकर उन पर निगरानी रखने बात कर रही है। इसके पहले दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने यमुना दे दूषित पानी में डुबकी लगाकर यह जताने की कोशिश की थी कि नदी का पानी कितना जहरीला है। हालांकि इस डुबकी से उनके शरीर पर चकत्ते पड़ गए और उन्हे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। बावजूद इन सबके दिल्ली में प्रदूषण के हालात कब सुधरेंगे, कोई नहीं जानता।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं। लेखक पत्रकार हैं।

चिकित्सा को मिले मूल अधिकार का दर्जा

पिछले लगभग 4-5 वर्षों से सारी दुनिया नये-नये प्रकार की महामारियों से पीड़ित है और इससे भारत में ही लाखों मौत के शिकार हुये हैं। अनेकों अंतरराष्ट्रीय अध्ययनकर्ताओं ने इनसे मृतकों की संख्या 30-40 लाख भी बताई है,वैसे भी भारत में अनेकों बीमारियों के चलते लाखों लोग मौत के शिकार होते हैं। कैंसर जैसी बीमारियों का नाम पहले यदाकदा सुनने को मिलता था, अब लाखों लोग कैंसर से पीड़ित हैं।

कैंसर के अस्पताल भरे पड़े हैं और हजारों लोग प्रतिवर्ष मौत के शिकार हो रहे हैं। जिनमें अधिकांश लोग वे हैं जिन्हें ईलाज उपलब्ध नहीं है या एक बड़ा हिस्सा उन लोगों का है, जिन्हें ईलाज पर्याप्त नहीं मिल पाता है। इसी प्रकार टी.बी. जैसी बीमारियां भी हजारों लोगों की जान ले लेती है, प्रदूषण तो इतनी गंभीर समस्या बन गई है कि महानगरों के छोटे-छोटे बच्चे भी अस्थमा, श्वास जनित बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय से लेकर सरकार तक प्रदूषण को लेकर चिंता व्यक्त करती रही है। परंतु मर्ज लाईलाज है।

मोदी सरकार ने पहले कार्यकाल में आयुष्मान योजना की घोषणा की थी। गरीबी की सीमा रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों को 5 लाख रुपये तक का ईलाज सरकार की ओर से देने की घोषणा की थी। वैसे यह योजना अच्छी थी परंतु इस योजना में भारी भ्रष्टाचार हुआ। एक तो राज्य सरकारों ने अपनी सुविधा और अनुकूलता से आयुष्मान योजना के लिये अस्पताल चिन्हित किये। अधिकांश मामलों में आयुष्मान कार्ड की 5 लाख रुपये की राशि का भारी भ्रष्टाचार हुआ। कई निजी अस्पतालों में तो चिकित्सक और मरीजों के बीच समझौता जैसा हो गया और मामूली सी बीमारी को बड़ी से बड़ी बीमारी बताकर पैसे का बंटवारा कर लिया गया। पिछले दिनों एक रपट छपी थी कि भारत सरकार ने प्राप्त शिकायतों के आधार पर जो जांच कराई उनमें कई हजार करोड़ रुपयों का घोटाला का भ्रष्टाचार पाया गया।

अभी तक हमारे देश में जो चिकित्सा की व्यवस्था है वह निम्न हिस्सों में बंटी हुई है।

1. केंद्र सरकार के कर्मचारी सीजीएसएच योजना के पात्र होते हैं और उन्हें सेवा कार्यकाल में और सेवानिवृत्ति के बाद भी मुफ्त ईलाज मिलता है। इसी प्रकार सेना, सीआरपीएफ आरपीएफ आदि केंद्र कार्य या सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मुफ्त ईलाज की व्यवस्था है।

2. राज्य सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी सेवाकाल में ईलाज मुफ्त मिलता है और सेवानिवृत्ति के बाद भी कई प्रकार की योजनाएं उनकी चिकित्सा के लिये बनाई गई हैं।

3. सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिये यदा बैंक, एविऐशन, स्टील प्लांट, कोयला क्षेत्र, लोह क्षेत्र,बंदरगाह आदि के कर्मचारियों के लिये उनकी नियोक्ता संस्थाओं की ओर से ईलाज की व्यवस्था की गई है। बहुत सारे संस्थानों ने खुद अस्पताल बनाये हैं जिनमें बेहतर ईलाज की व्यवस्था है। और कुछ सार्वजनिक क्षेत्र के कारखाने वालों ने बड़ी-बड़ी नामधारी निजी अस्पतालों के साथ समझौता किया है जहां उन्हें समुचित ईलाज की व्यवस्था है।

4. बहुत सारे सरकारी, गैर सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों को संस्थानों की ओर से सामूहिक चिकित्सा बीमा की योजना लागू की गई है।

5. गरीबी की सीमा रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों को भी सरकारी चिकित्सालयों में या प्रशासन की मदद से मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हैं।

6. देश के अमीरों और उच्च, मध्यम वर्ग के ईलाज के लिये उनके पास देश व विदेश में पर्याप्त साधन हैं। देश का व्यापारी तबका कारपोरेट कारखानेदार इसमें आते हैं यानि ये सब मिलाकर लगभग 20-25 करोड़ लोग होते हैं जिन्हें चाहे सरकार से चाहे संस्थान या चाहे बीमा से या अपनी क्षमता से निःशुल्क ईलाज की व्यवस्था उपलब्ध है। और अगर यह मान लिया जाये कि इनके परिवार में औसतन 4-5 लोग हैं तो औसतन 90 से 100 करोड़ लोगों को सरकारी या गैर सरकारी चिकित्सा उपलब्ध है। देश के राजनेताओं, सांसदों या पूर्व सांसदों, विधायकों को क्रमशः लोकसभा या विधानसभाओं के माध्यम से श्रेष्ठतम निशुल्क चिकित्सा उपलब्ध है। इस आधार पर लगता है कि देश के मध्यम वर्ग के लोग, कुछ मध्यम किसान, पत्रकार ही वे अभागे लोग हैं जिन्हें निशुल्क सरकारी चिकित्सा उपलब्ध नहीं है। जिनकी आर्थिक क्षमता भी ईलाज लायक नहीं है। और जो गरीब हैं, न अमीर हैं, न कर्मचारी हैं, न व्यापारी हैं बल्कि ऐसे भारतीय हैं जिनके पास आर्थिक या राजनैतिक ताकत नहीं है। इसलिये वे व्यवस्था से पूर्णतरू उपेक्षित हैं। इन्हें मामूली से बुखार जैसी बीमारी की चिंता होती है कि ईलाज कैसे होगा? क्योंकि सरकारी अस्पताल या तो बहुत दूर हैं और हैं भी तो उनमें इतनी भीड़ है कि ईलाज पाना दुष्कर कार्य है। निजी अस्पतालों में उन्हें ईलाज पाना कठिन होता है। मामूली बुखार के ईलाज में फीस, दवा व जांच में कई हजार खर्च हो जाते हैं।

वैसे तो देश में एम्स, सिम्स जैसे बड़े-बड़े सरकारी अस्पताल स्थापित किये गये हैं परंतु वहां आने वाले मरीजों की संख्या और चिकित्सकों की उपलब्धता अकल्पनीय है। हमारे एक साथी श्याम सुंदर यादव की बेटी को, अपने बेटे का एक छोटा सा आपरेशन कराना है जो दिल्ली के एम्स में होना है। उसके पहले वह आगरा के निजी चिकित्सालय में अपनी क्षमता भर ईलाज करा चुकी परंतु उससे उन्हें लाभ नहीं हुआ।

अब उनसे कहा गया है कि एक छोटा सा आपरेशन दिल्ली एम्स में होगा। वह दिल्ली बेटे को लेकर गये थे और दिल्ली के डॉक्टर ने उसे देखा, आपरेशन के लिये कहा और आपरेशन के लिये ढाई वर्ष बाद की तारीख दी है। मैं इसमें एम्स संस्थान या उसके कुशल चिकित्सकों का कोई दोष नहीं मानता, क्योंकि वे लोग अपनी पूरी क्षमता से, लगन व मेहनत से ईलाज करते हैं परंतु मरीजों की संख्या इतनी ज्यादा है कि वे स्वतरू भी लाचार हैं। यह खाका इसलिये खींचा है ताकि सरकार समझ सके कि सरकार चिकित्सा और ईलाज के लिये जो तरीका अपना रही है उससे देश की बड़ी आबादी को चिकित्सा मिलना संभव नहीं है। फिर सरकारी अस्पतालों में ईलाज और दवाओं के नाम पर भी भेदभाव होता है। अफसरशाही राजनेताओं या उनकी सिफारिश वालों के लिये न केवल बेहतर ईलाज मिल जाता है बल्कि ब्रांडेड दवाईयां भी मिल जाती है। मरीज ज्यादा हैं और सरकार का दवाओं के लिये बजट जरूरत से काफी कम रहता है। इसका परिणाम यह है। अस्पतालों में दो प्रकार की दवाओं की खरीद होती है, एक सामान्य मरीजों के लिये जेनेरिक और लोकल मेड जैसी दवाओं की खरीदी होती है जो बीमारी को मिटाने लिये सक्षम नहीं होती, लंबे समय तक मरीज यह दवायें, गोलियां खाते रहते हैं और बाद किसी दिन कोई नर्स या कम्पाउंडर सलाह दे देता है कि यहाँ की दवाओं से फायदा नहीं होगा, बाहर से ब्रांडेड कंपनियो की दवाईयां खरीदो जो भारी महंगी होती हैं। जबकि राजनेताओं, अफसर और ताकतवर लोगों को ब्रांडेड दवायें उपलब्ध रहती हैं। सरकार को चाहिये कि वह इसका भी अध्ययन कराये कि सरकारी चिकित्सालयों ने कितनी दवाईयां जिनेरिक खरीदी गयीं और कितनी ब्रांडेड। तथा ब्रांडेड दवाईयां किनको दी तथा जिनेरिक दवाईयां किनको दी गई।अधिकांश सरकारी चिकित्सालयों की हालत यह है कि वहां मशीनी जांच के साधन उपलब्ध नहीं हैं, या तो मशीनें नहीं हैं, मशीनें हैं तो खराब हैं। करोड़ों की मशीनें डम्प पड़ी हैं, जिन्हें चलाने वाले तकनीकी जानकार नहीं हैं। और परिणाम यह होता है कि खून की जांच, ईसीजी, एक्सरे आदि जांचों के लिये सामान्य मरीजों को बाजार के हवाले कर दिया जाता है। हमारे देश अपवाद छोड़े तो आमतौर पर चिकित्सकों का व्यवहार मरीजों को ठीक करना कम धन कमाना ज्यादा हो गया वे मरीज का हाथ पकड़ने के पहले उसकी माली हालत पूछते हैं।

अधिकांश सरकारी अस्पताल के सरकारी डॉक्टर प्राइवेट प्रेक्टिस कर रहे हैं। उनके लिये सरकारी अस्पताल केवल मरीजों को रिफर करने का संस्थान हैं, जहां से वे मरीजों को अपने निजी अस्पतालों में रिफर कर देते हैं। हालात इतने बदतर हैं कि कितने ही डॉक्टर जिन्हें मरीज अपना भगवान मानता है, उनसे वे साहूकार जैसा व्यवहार करते हैं, यद्यपि सभी नहीं कुछ अपवाद भी है। प्रायवेट डॉक्टर तो आमतौर पर मरीज की आर्थिक स्थिति देखते हैं और फिर फीस आदि का निर्धारण करते हैं। कितने ही जांच करने वाले संस्थान, दवा बेचने वालों को मैं जानता हूँ जो डॉ. साहेबान को जांच और दवा लिखने के बदले में एक निश्चित कमीशन की राशि देते हैं। देशी-विदेशी बड़ी-बड़ी दवा निर्माता कंपनियां चिकित्सक साहबानो को विदेशों की यात्रा कराते हैं, पुरुस्कार देते हैं और यह सब क्यों होता है, यह सब कौन नहीं जानता? निजी चिकित्सालय और बड़े-बड़े नाम वाले चिकित्सालय, गैर चिकित्सक पूंजीपति लोग हैं। अस्पताल तो ठहरने के लिये पाँच सितारा होटलों जैसी बन गयी, जिनका भारी भरकम किराया होता है और जांच के नाम पर विशेषज्ञों को बुलाया जाता है, जिन्हें कुछ राशि दी जाती है और बकाया अस्पताल के मालिक के पास जाता है। अति संपन्न मरीजों को इनमें ईलाज कराना फायदेमंद ही है क्योंकि टैक्स बचता है। भारतीय संविधान के अनुसार चिकित्सा यद्यपि अभी तक मूल अधिकार नहीं है परंतु संविधान के डायरेक्टेड प्रिंसिपल में है। डायरेक्टेड प्रिंसिपल नीति निर्देश संविधान बनाते समय उन विषयों के लिये समाहित करने के लिय तय किये गये थे जिन्हें आज से 75 साल पहले और आजादी के तत्काल बाद क्रियान्वित करने की सरकार के पास संसाधन की क्षमता नहीं थी और इसलिये इस उम्मीद के साथ कि कुछ ही समय में सरकारें इन्हें संविधानिक अधिकार बनायेगी, नीति निर्देश के रूप में रखा गया था परंतु सरकार ने अभी तक चिकित्सा को संवैधानिक मूल अधिकार नहीं बनाया। हालांकि मैं यह जानता हूँ कि अकेले मूल अधिकार के खण्ड में शामिल करने मात्र से सबको चिकित्सा तत्काल उपलब्ध नहीं होगी। शिक्षा के लिये मूल अधिकार में शामिल किया गया परंतु वह बहुत सफल नहीं हुआ व सरकारों ने कुछ प्रतिशत सीटें गरीब छात्रों को निजी शिक्षण संस्थानों में आरक्षित करने का नियम बनाया, परंतु उन निजी शिक्षण संस्थानों को वे बाध्य नहीं कर सके। एक तो इसलिये भी कि निजी शिक्षण संस्थानों के मालिकों के हाथ बड़े लंबे हैं और आमतौर पर वे जिस श्रेणी और संपन्न वर्ग से आते हैं वह सत्ताधीशों का अपना वर्ग होता है, जिस पर हाथ डालना या दबाव बनाना सरकारों के लिए आसान नहीं होता, और कुल मिलाकर ढाक के तीन पात रह जाते हैं। जब तक सरकार संपूर्ण शिक्षा का सरकारीकरण नहीं करेगी तब तक शिक्षा का मूल अधिकार संविधान के पन्नों में दर्ज रहेगा परंतु जमीन पर नहीं उतरेगा।

इसलिये भारत सरकार से मैं व लो.स.पा. पिछले दो दशकों से लगातार विभिन्न माध्यमों से मांग कर रही है कि चिकित्सा को मूल अधिकार के खण्ड में शामिल किया जाये, चिकित्सा का संपूर्ण सरकारीकरण किया जाये और चिकित्सा सबको मिल सके यह व्यवस्था की जाये। जैसा मैंने ऊपर बताया कि 90-100 करोड़ लोगों के पास निजी या सरकारी पर्याप्त चिकित्सा के साधन है। भारत के 40-50 करोड़ लोग ही इससे वंचित हैं। इसलिये अगर सरकार चिकित्सा को मूल अधिकार और सबको आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराने का प्रावधान करेगी तो ही हल निकलेगा, और इसके लिये चिकित्सा का संपूर्ण रूप से सरकारीकरण जरूरी होगा। अगर सरकार यह करेगी तो जहां एक तरफसभी को जरूरत के अनुसार चिकित्सा मिलेगी, बेहतर दवाईयां मिलेगी, भ्रष्टाचार व लूट बंद होगी साथ ही कोई विशेष राशि भी नहीं लगेगी। दुनिया के कई देशों में यहां तक कि क्यूबा जैसे छोटे-छोटे देशों में यह व्यवस्था बनाई गई है व सफल है। जब श्रीमती प्रतिभा पाटिल देश की राष्ट्रपति थीं तो हमारी पार्टी के धरने व ज्ञापन के बाद उन्होंने अपने स्तर पर एक पहल शुरू की थी। मैं उनका आभारी हूँ। और यह प्रस्ताव काफी दूर तक गया था। परंतु उनके राष्ट्रपति पद से हटने के बाद वह प्रस्ताव ठंडे बस्ते में चला गया। आज देश की राष्ट्रपति महिला है और अपनी सभी संवैधानिक लाचारियों के बाद भी वह संवेदनशील हैं।

वे आदिवासी हैं और आदिवासी की पीड़ा को, उनके हालातों को, बीमारी से उनकी मौतों को उनसे बेहतर कौन जान सकता है? मैं उनसे अपील करूँगा कि पद पर व्यक्ति कोई भी हो परन्तु भारत के राष्ट्रपति की संस्था की ओर से जो पहल की गई थी उस पहल को वे पुनः क्रियाशील बनायें। प्रधानमंत्री जी को सलाह दें और चिकित्सा को मूल अधिकार में शामिल कराने तथा सबको जरूरी चिकित्सा उपलब्ध कराने तथा चिकित्सा को संपूर्ण रूप से सरकारी क्षेत्र में लाने की पहल करें। इस निर्णय से देश के करोड़ों लोगों को जीवनदान मिलेगा।

राजनीति

अवधेश कुमार

लेखक पत्रकार हैं।

बहराइच हिंसा का सच स्वीकारें

बहराइच सांप्रदायिक हत्याकांड के आरोपियों के मुठभेड़ पर जिस त्वरित गति से तीखी प्रतिक्रिया आई उसका शतांश भी स्व रामगोपाल मिश्रा की हत्या और उसके साथ हुई बर्बरता पर नहीं देखी गई। यह भारतीय राजनीति, बौद्धिक जगत और एक्टिविज्म की दुनिया की ऐसी ट्रेजेडी है जिसकी समानता इतिहास में ढूंढनी मुश्किल हो जाएगी। पुलिस मुठभेड़ में दो आरोपियों के पैर में ही गोली लगी। पुलिस के हर मुठभेड़ को झूठ और गैरकानूनी हत्या या गोली मारना बताने वाले नेता व एक्टिविस्ट इतनी भी संवेदनशीलता नहीं बरत पाये कि वे गोपाल मिश्रा के साथ हुई बर्बरता की निंदा करते। समूचे देश में भाजपा विरोधी आम नेताओं , पार्टियों , मुस्लिम नेताओं, बुद्धिजीवियों, नामी मौलानाओं , इमामों, संस्थानों के प्रमुखों ज्सबके बयानों को खंगाल लीजिए, आपको शायद ही कहीं रामगोपाल मिश्रा की हत्या व नृशंसता की आलोचना में एक शब्द मिल जाए। ठीक इसके विपरीत दुर्गा प्रतिमा विसर्जन और उसमें शामिल लोगों के व्यवहार, डीजे से निकलते गानों आदि की आक्रामक आलोचना और निंदा की भरमार मिलेगी। पूरा इको सिस्टम और नैरेटिव ऐसा बनाया गया मानो प्रतिमा विसर्जन करने निकले लोग ही दोषी हैं, उन्होंने उकसाया , जबरन घर पर चढ़कर हरे झंडे उतारे और उधर से केवल प्रतिक्रिया हुई। जिन लोगों ने आरंभ में चुप्पी साधी वे भी मुठभेड़ के बाद इसी तरह का नैरेटिव लेकर आ गए हैं। यह हतप्रभ करने वाली स्थिति है। टीवी डिबेट में पूछने पर अवश्य बोलेंगे कि हत्या गलत है पर किंतु परंतु लगाते हुए प्रतिमा विसर्जन में शामिल लोगों को ही दोषी साबित करने के लिए सारे तर्क हैं। कोई भी साहस के साथ यह सच बोलने को तैयार नहीं है कि पिछले कुछ वर्षों से लगातार हिंदू पर्व-त्योहारों ,उत्सवों, दिवसों की शोभायात्राओं या प्रतिमा विसर्जन के लिए चलते जन समूह पर जगह-जगह हमले क्यों बढ़ रहे हैं? दुर्गा प्रतिमा विसर्जनको लेकर ही समाचार पत्रों की रिपोर्ट में ऐसी दो लगभग दो दर्जन घटनाएं आ चुकी है जहां उन पर पत्थरबाजी हुई , पत्थर बरसाए गए , कहीं रोकने की कोशिश हुई तो मार-पिटाई तो कहीं मूर्ति। अजमेर दरगाह के सरफराज चिश्ती ने भड़काऊ बयान देते हुए कह दिया कि न्यूटन की गति के नियमानुसार क्रिया की प्रतिक्रिया होगी। आप उकसाने वाले नारे लगाएंगे, डीजे में वैसे गाने बजाएंगे और घर पर चढ़कर झंडा उतारेंगे तो आप पर फूल नहीं बरसाए जाएंगे।

यह अकेला बयान नहीं है। पूरे प्रकरण का आप मूल्यांकन करें तो निष्कर्ष आएगा कि जिम्मेवार और सम्मानित स्थान पर बैठे मजहबी व्यक्तित्व और नेता ऐसे बयान दे रहे हैं उससे समुदाय के अंदर उग्रता और असहिष्णुता बढ़ने का खतरा है। दुर्भाग्य से भाजपा, नरेंद्र मोदी सरकार, उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार अन्य राज्यों की भाजपा विरोध में राजनीति करने वाले नेताओं और पार्टियों का स्वर घोषित - अघोषित इनका समर्थन देने वाला है।

उत्तर प्रदेश पुलिस ने इन पंक्तियों के लिखे जाने तक बहराइच हिंसा में 58 लोगों को गिरफ्तार किया तथा 10 हिरासत में है, 13 मुकदमे दर्ज किया जा चुके हैं। हत्या के पांच आरोपितों को गिरफ्तार किया गया और इसी दौरान सरफराज और मोहम्मद तालिब के पैरों में पुलिस की गोली लगी है। हर मुठभेड़ की जांच मजिस्ट्रेट स्तर पर होती है और इसका भी होगा। योगी आदित्यनाथ सरकार के मुठभेड़ों की तुलना पिछली सरकारों से करें तो जांच रिपोर्ट और न्यायालयों के आदेश के अनुसार रिकॉर्ड बेहतर है। सबसे ज्यादा फर्जी मुठभेड़ का रिकॉर्ड अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी शासन के दौरान 2015 का ही है। किंतु बहराइच हिंसा के मामले में इस पहलू को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बढ़ाकर हमला करने वाले वास्तव में मुख्य मुद्दे से ध्यान भटकाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। आखिर प्रतिमाओं के विसर्जन का रूट पहले से तय था, वीडियो बता रहे हैं कि घटनास्थल के पास गेट व झंडे लगे थे। साफ है कि यह पुलिस की अनुमति से हुआ था। हर शहर और गांव में बरसों से प्रतिमा विसर्जन के रास्ते निश्चित हैं। इस तरह की घटना होनी नहीं चाहिए।

बहराइच पुलिस प्रशासन की भयानक विफलता बिल्कुल स्पष्ट है। पर्याप्त मात्रा में सतर्क पुलिस बल होता तो घटना को रोका जा सकता था। जितने विवरण सामने आए हैं उनके अनुसार डीजे बजाने को लेकर विवाद किया गया, दूसरे पक्ष ने बंद करने को कहा जबकि स्वाभाविक ही विसर्जन यात्रा के लोगों ने स्वीकार नहीं किया, गाली -गलौज,धक्का- मुक्की हुई, दुर्गा प्रतिमा भी खंडित की गई तथा कुछ भगवे झंडे उतारे गए। रामगोपाल मिश्रा इसी गुस्से में कुछ साथियों के साथ उसघर की छत पर चढ़गया जिसके कारण बाउंड्री का भाग गिरा तथा झंडा उतारने लगा। निश्चित रूप से घर पर झंडा उतारने की प्रतिक्रिया गलत है और अस्वीकार्य है। साफ है कि पुलिस का कारगर हस्तक्षेप होता तो विवाद आगे बढ़ता नहीं। डीजे बजाने को रोकने वाले या प्रतिमा खंडित करने वालों के विरुद्ध पुलिस को खड़ा होना चाहिए था और ऐसी स्थिति पैदा होनी चाहिए थी कि दूसरे ऐसा करने का दुस्साहस न करें। इतनी देर तक संघर्ष होता रहा और पुलिस मूकदर्शक बनी रही। समाचार पत्रों की रिपोर्ट बताती है कि अंततः पुलिस ने प्रतिमा विसर्जन में शामिल लोगों पर ही लाठियां चलाईं जिससे लोग भागे तथा रामगोपाल अकेले फंस गया। इस दृष्टि से उसकी हत्या और साथ हुई बर्बरता का दोषी बहराइच पुलिस भी है। केवल एक तहसीलदार को निलंबित करने से पुलिस प्रशासन की घातक विफलता का परिमार्जन नहीं हो सकता।

दूसरी ओर यह भी देखिए, अगर परिवार के अंदर कानून व्यवस्था का सम्मान होता तो वह कम से कम रामगोपाल को पुलिस के हवाले करता। इसकी जगह बेरहम पिटाई, बर्बरता हुई और फिर गोली मारी गई। यह बगैर मजहबी जुनून और नफरत के संभव ही नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में रामगोपाल की मृत्यु का कारण गोली लगना है। किंतु पोस्टमार्टम करने वाले डॉ संजय शर्मा का बयान है कि उनके पैरों के अंगूठे के नाखूओन के भाग नहीं थे, आंख के ऊपर नुकीले चीजों से वार था। शरीर पर स्वाभाविक ही अलग-अलग चोट के निशान थे। यानी शव को विकृत करने की कोशिश हुई या पहले ही उसकी निर्मम पिटाई की गई। गोली मारने का वीडियो भी सामने आ चुका है। किसी के शरीर से अगर तीन दर्जन छर्रे निकलते हैं तो आप कल्पना करिए की कितनी नफरत किसी धर्म विशेष को लेकर पैदा की जा चुकी है।

यह समझ से परे है कि आखिर किसी भी धर्मस्थल या घर के बाहर से दूसरे धर्म की यात्राओं के गुजरने, नारे लगने, गाना बजने, झूमने, नाचने का विरोध या उसके विरुद्ध हिंसा क्यों हो सकती है? अगर हिंदू धर्मस्थलों के सामने से मुसलमान के जुलूस पर आपत्ति हो और मुसलमान के घरों और धर्मस्थलों से हिंदुओं के जुलूस पर तो इससे बुरी स्थिति नहीं हो सकती। सच है कि हिंदुओं के क्षेत्र से गुजरने वाली मुस्लिम यात्राएं बाधित नहीं होती और न उन पर पत्थर चलते हैं, न ही हिंसा होती है। ज्यादातर हिंसा हिंदुओं की शोभायात्राओं या जुलूसों के विरुद्ध ही हो रहे हैं। यह सामान्य स्थिति नहीं है। अभी तक की ऐसी घटनाओं में पुलिस के ही आरोप पत्रों को देखें तो ज्यादातर पहले से तैयारी के साथ नियोजित हमले हुए। वैसे भी किसी मस्जिद या सामान्य घर पर मिनट में उतनी संख्या में पत्थर-ईट, पेट्रोल पंप या आग्नेयास्त्र नहीं आ सकते जिनका प्रयोग हमने देखा है। तो जो क्रूर सच है उसे उसी रूप में देखने समझने से ही निदान संभव है। कहीं किसी ने इस्लाम या मोहम्मद साहब को लेकर कोई बयान दे दिया, जो बिल्कुल गलत है, पर उस पर प्राथमिकी दर्ज हो गई तब भी देशभर में गुस्ताख ए रसूल की एक ही सजा सिर तन से जुदा,सिर तन से जुदा के डरावने हिंसक नारे लगाती उग्र भीड़ ऐसे व्यवहार कर रही है मानो उस व्यक्ति को इसी समय पीट-पीटकर मार डालेंगे। संबंधित व्यक्ति के धर्मस्थलों पर हमले करने की भी कोशिश होती है और वहां पुलिस सजग नहीं हो तो कुछ भी हो सकता है। यह प्रवृत्ति जिस तरीके से बढ़ी है और कानून व्यवस्था का भय छोड़कर लोग स्वयं अपने हाथों निपटारा करने के लिए निकलने लगे हैं उससे अगर हमारे नेताओं, बुद्धिजीवियों, एक्टिविस्टों तथा पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को भी भय व चिंता नहीं हो तो मान लेना चाहिए कि हमारा पूरा इको सिस्टम दिग्भ्रमित है। राजनीतिक तौर पर भाजपा और संघ परिवार के विरोध में देश को मजहबी जुनून की आग में झोंकने का अपराध भविष्य में सबके लिए आत्मघाती साबित होगा।

24 सालों से मप्र के पेंशनरों के साथ अन्याय

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

केंद्र सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों और पेंशनरों को जुलाई 2024 से 3 प्रतिशत डीए और डीआर देने के आदेश दे दिए गए हैं। इस प्रकार केन्द्र के कर्मचारियों और पेंशनरों को वर्तमान में महंगाई भत्ता और मंहगाई राहत बढ़कर 53 प्रतिशत हो गया है। किन्तु मध्यप्रदेश के कर्मचारियों और पेंशनरों को अभी केवल 46 प्रतिशत मंहगाई भत्ता और महंगाई राहत ही प्राप्त हो रही है। इस प्रकार केन्द्र के कर्मचारियों की तुलना में मध्यप्रदेश के कर्मचारियों और पेंशनरों को 7 प्रतिशत कम महंगाई भत्ता और महंगाई राहत प्राप्त हो रही है। यही नहीं मध्यप्रदेश की सरकार अपने पेंशनरों से भी भेदभावपूर्ण व्यवहार कर रही है। इसकी लंबी सूची है। मध्यप्रदेश के पेंशनरों के साथ पिछले 24 सालों से अन्याय हो रहा है।

राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 के तहत नए राज्यों के रूप में मध्यप्रदेश से 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश से 9 नवंबर 2000 को उत्तरांचल और बिहार से 5 नबंबर 2000 को झारखंड राज्य अस्तित्व में आया। इन किसी भी राज्य में एक दूसरे राज्य की सहमति के बिना महंगाई राहत का भुगतान हो रहा है। राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 की छठवीं अनुसूची की धारा 49 में पेंशनर्स के संबंध में जिम्मेदारी के विभाजन की बात का उल्लेख है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा इसकी गलत व्याख्या कर विगत 24 वर्षों से मध्यप्रदेश के पेंशनरों के साथ अन्याय किया जा रहा है। पेंशन देनदारियों के लिए नियत अनुपात मध्यप्रदेश के लिए 76 प्रतिशत और छत्तीसगढ़ के लिए 24 प्रतिशत है। इसका-समायोजन वित्तीय वर्ष के अंतिम माह मार्च में होना निर्धारित किया गया है। पुनर्गठित राज्यों में उत्तर प्रदेश से उत्तरांचल एवं बिहार से झारखंड में महंगाई राहत के भुगतान में दोनों राज्य सरकारों की परस्पर सहमति लिए बिना लगातार भुगतान समय-समय पर हो रहा है। किन्तु एक मात्र मध्यप्रदेश राज्य ही है, जो छत्तीसगढ़ से पेशनरों की महंगाई राहत के लिए सहमति मांगता है और जबसे छत्तीसगढ़ राज्य सहमति देता है, तब से मध्यप्रदेश के पेंशनरों को महंगाई राहत मिलती आ रही है। इसमें भी अनेक बार भेदभाव हो चुका है। ऐसा उक्त किसी भी राज्यों में नहीं हो रहा है। यह अजूबा केवल मध्यप्रदेश में ही हो रहा है!

भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष जनवरी एवं दिसंबर में साल में दो बार अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की वृद्धि के आधार पर महंगाई भत्ता और महंगाई राहत की घोषणा की जाती है। भारत सरकार द्वारा केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों और पेंशनरों और केंद्रीय वेतनमान पाने वाले राज्यों के अधिकारियों और पेंशनरों की क्षतिपूर्ति स्वरूप वर्ष में दो बार महंगाई भत्ता/महंगाई राहत की घोषणा करता है। केंद्र सरकार की मंशा यह रही कि तत्काल प्रभाव से अधिकारियों और कर्मचारियों को इसका आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके। किंतु मध्यप्रदेश के पेंशनर्स ने कभी भी महंगाई राहत समय पर प्राप्त नहीं की है। प्रदेश के शासन और प्रशासन की मेहरबानी पर पेंशनर निर्भर है। उनकी जब मर्जी होती है, तब से वे मंहगाई राहत की घोषणा करते हैं। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने छठे वेतनमान का एरियर देते समय भी ऐसा ही किया था। प्रदेश के अधिकारियों और कर्मचारियों को छठे वेतनमान का एरियर दे दिया गया था, किन्तु पेंशनरों को एरियर की राहत राशि नहीं दी गई थी। मध्यप्रदेश के पेंशनर एसोसिशन द्वारा उच्च न्यायालय जबलपुर में याचिका लगाकर 1 जनवरी 2006 से 31 अगस्त 2008 तक की 32 माह की छठे वेतनमान की एरियर राशि देने की माँग की गई थी। उच्च न्यायालय द्वारा पेंशनरों के हित में निर्णय लेने के बाद भी राज्य सरकार ने पेंशनरों को एरियर राशि नहीं दी। इस कारण पेंशनर्स एसोसिएशन ने उच्च न्यायालय में अवमानना याचिका लगा दी थी। तब से उस पर तारीख पर तारीख मिल रही है। इसी प्रकार पेंशनर एसोसिएशन ने छठें वेतनमान की एरियर राशि देने के उच्च न्यायालय के आदेश के आधार पर पेंशनरों के सातवें वेतनमान की जनवरी 2016 से मार्च 2018 तक 27 माह की एरियर राशि भी पेंशनरों को नहीं देने पर उच्च न्यायालय में याचिका लगा दी है। उच्च न्यायालय द्वारा 27 जनवरी 2021 को याचिका स्वीकार भी कर ली है। किन्तु राज्य सरकार एरियर राशि नहीं देने पर अड़ी है और उच्च न्यायालय से तारीख पर तारीख ले रही है! राज्य सरकार द्वारा पेंशनरों के साथ किए जा रहे भेदभाव का एक और उदाहरण देखिए। केन्द्र सरकार ने 13 नवम्बर 2017 को मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव को पत्र जारी कर पेंशनरों के हित में निर्देश भी जारी किए थे। उसके अनुसार केन्द्र सरकार के गृह विभाग ने 13 नवम्बर 2017 को पेंशनर्स एसोसिएशन मध्यप्रदेश भोपाल को चिट्ठी लिखकर धारा 49 के उन्मूलन की जानकारी भी दे दी थी। इस पत्र की प्रतिलिपि उन्होंने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव को भी दी थी। इसके बावजूद दोनों राज्य इस अति महत्वपूर्ण पत्र को दबाकर बैठ गए हैं। मध्यप्रदेश पेंशनर्स एसोसिएशन द्वारा अनेक बार राज्य सरकार को इस पत्र का हवाला देते हुए धारा 49 के उन्मूलन की चर्चा करते हुए छत्तीसगढ़ से सहमति नहीं माँगने का अनुरोध किया था, किन्तु राज्य सरकार के कानों पर जूं नहीं रैंगी ! इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि धारा 49 यदि लागू भी होती है तो वह सन् 2000 के पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों और अधिकारियों पर लागू होगी! इसके बाद सेवानिवृत्त होने वाले किसी भी कर्मचारी पर यह लागू नहीं होगी। इस महत्वपूर्ण बिन्दू को भी राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी घोलकर पी गए हैं।

मध्यप्रदेश के अनेक पेंशनर्स एसोसिएशनों द्वारा समय-समय पर सैकड़ो बार पेंशनरों के साथ पिछले 24 साल से हो रहे अन्याय को बंद कर न्याय दिलाने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री, मुख्य सचिव और वित्त सचिव को पत्र भेजकर और मिलकर निवेदन किया, किन्तु उसका कोई सकारात्मक परिणाम अभी तक नहीं मिला है। प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव दिसम्बर 2023 से मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बने है। उनसे आशा है कि वे पेंशनरों की पुकार को सुनेंगे और उन्हें न्याय दिलायेंगे !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

अरुण अर्णव खरे ....

लेखक व्यंग्यकार हैं।

रामराज वाया भड़ास कैफे

कुछ दिन पहले इंदौर में एक भड़ास कैफे का शुभारम्भ हुआ था । उस समय जिसने भी ये समाचार पढ़ा वह चौंक गया और थोड़ा-बहुत अपने स्वभावानुसार परेशान भी हुआ, पर कैफ़े था कि रातोंरात हिट हो गया । कैफ़े की कीर्ति दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से चारों दिशाओं में फैलती चली गई । कैफ़े में श्रद्धानुसार भड़ास निकालने के लिए मनचाही तमाम सुविधाएं इकट्ठी की गई थी। छोटी-मोटी भड़ास के लिए कप-प्लेट मटके वगैरा, मीडियम श्रेणी की भड़ास के लिए डिनर सेट, टाइप राइटर, ब्लैक एंड व्हाइट टीवी सेट आदि, प्रथम श्रेणी की भड़ास के लिए सोफासेट, कंप्यूटर, मोबाइल और एग्जीक्यूटिव भड़ास के लिए फ्रिज, वाशिंग मशीन और प्ले स्टेशन जैसे सामान उपलब्ध थे । प्रतिदिन बॉस, सहकर्मियों, पड़ोसियों और अपने जीवनसाथियों तक के प्रति वर्षों से दिल में क्रोध और घृणा लिए घूमने वाले, मुखर होकर भारी संख्या में इस केन्द्र में भड़ास निकालने पहुँच रहे हैं ।

कुछ लोगों को इस केंद्र से परेशानी भी है । अहिंसा परमो धर्मः वाले हमारे इस संस्कारवान देश में उन्हें ये कैफ़े तालिबानी संस्कृति का मिनिएचर संस्करण लग रहा है । उनका डर अपनी जगह सही भी है । जो एक बार इस कैफ़े में जाकर भड़ास निकाल कर आ रहा है उसकी धाक बिना जमाए ही जमी जा रही है । सावित्री जोशी का क़िस्सा लीजिए, जबसे उन्होंने पूरे जोश में आकर इस केंद्र मे अपने पति पर भड़ास निकाली तबसे उनकी ख्याति हंटरवाली जैसी हो गई है । किटी पार्टियों में उन्हें एक किसिम का अध्यक्षीय दर्जा मिल गया है और हद तो तब हो गई जब वह कॉलोनी के महिला-क्लब की निर्विरोध अध्यक्ष भी चुन ली गई । कोमल सिंह की सी.आर. उनके अफ़सर ने केवल इसलिए ए प्लस लिख दी कि उन्हें पता चला था कि पिछली शाम को ही कोमल बाबू ने कंप्यूटर तोड़कर अपने इमीडिएट बॉस पर भड़ास निकाली है । सास पर भड़ास निकालकर घर लौटी बहू को दरवाज़े पर ही सास दुलारी देवी ने मिट्टी के तेल की कुप्पी थमाते हुए उसे नाली में बहा देने का विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया। इतने सकारात्मक उदाहरणों से भी अंसतुष्ट लोग भड़ास केंद्र की अवधारणा को हज़म नहीं कर पा रहे हैं । इसका उत्तर तलाशते हुए एक सज्जन, बाबा से नेता बने शंभुनाथ जी के पास जा पहुँचे - 'बाबा जी, ये क्या हो रहा है राज्य में, सरकार आनंद मंत्रालय बना रही है और लोग भड़ास कैफ़े खोल रहे हैं' ।

शंभुनाथ जी प्रश्न और प्रसंग के अनुरूप गम्भीर हो गए - 'हमने रामराज लाने का जनता से वादा किया था, यह उस दिशा में हमारे द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण क़दम है' ।

उन सज्जन ने शंभुनाथ जी की ओर घनघोर नासमझ वाली दृष्टि से देखा -'बाबा जी, रामराज और भड़ास का आपस में क्या सम्बन्ध ..'

'तुमने रामायण पढ़ी है' 'हाँ बाबाजी, सुंदरकांड तो हमें कंठस्थ भी है' ।

'तो तुमने कोप-भवन के बारे में भी पढ़ा होगा' ।

'जी बाबा जी, वो वर माँगने वाले प्रसंग में उसका उल्लेख है' ।

'ये भड़ास कैफ़े भी त्रेता युग वाले कोप-भवन का कलयुगी मॉडल है । कैफ़े को ये नाम इस युग की गरिमा के अनुरूप दिया गया है । उस युग में कैकई को वर माँगने के लिए कोप-भवन में जाना पड़ा था पर इस युग में टू बीएचके फ्लैट में अपनी जिंदगी गुजारने वाले लोग अपने घर में कोप भवन एफोर्ड नहीं कर सकते इसलिए भड़ास कैफे का कन्सेप्ट लाया गया । ये प्रयोग बहुत सफल रहा है, इसमें जाने वाले को बिन माँगे ही इच्छित फल की प्राप्ति हो रही है । रामराज की दिशा में ये भड़ास कैफ़े मील का पत्थर सिद्ध होगा' ।

बाबा जी की बातें सुन कर वह सज्जन गहन चिंतन की मुद्रा में पहुँच गए - बहुत तार्किक और यथार्थपूर्ण बात कही है बाबा जी ने । बिना कोप-भवन के तो रामराज उस युग में भी कहां संभव हो पाया था ? इस युग में भी रामराज लाने के लिए एक अदद कोपभवन तो चाहिए ही । जय हो बाबा जी ।

ध्यान क्रिया

कर्मयोगी

(वरिष्ठ पत्रकार और लेखक)

जब हो 'ध्यान' का ज्ञान, तभी निखरे जहान!

'ध्यान' हमारे जीवन के हर कार्यक्षेत्र में गुणात्मक बदलाव लाता है। हमारे लक्ष्यों व उद्देश्यों को पूर्ण करता है। यह सिर्फ ऋषि-मुनियों का ही नहीं, आम व्यक्ति का जीवन संवारने का भी साधन है। भारत समेत दुनियाभर में योग व ध्यान के मठाधीशों ने इसे कारोबार व स्वार्थ सिद्धि का माध्यम बना दिया। ध्यान साधने के लिए पवित्र व संयमित जीवन व एकाग्र मन की जरूरत है। ध्यान कैसे लगाएं, कैसे तैयारी करें, कैसा हो हमारा आचार-व्यवहार, ऐसे तमाम सवाल आम व्यक्ति के सामने होते हैं। इन सवालों के जवाब दे रहे हैं, योग पर कई चर्चित पुस्तकें लिखने वाले योगाचार्य व सूरीनाम (दक्षिण अमेरिका) में भारत के राजदूतावास स्थित स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. सोमवीर आर्य।

'ध्यान' शब्द भी लगभग उतना ही प्राचीन है, जितना कि 'योग' शब्द। यही वजह है कि अनेक लोग ध्यान को ही योग समझते हैं। आज किसी से भी पूछो; ध्यान क्या है? तो जवाब मिलेगा, कि किसी एकांत स्थान पर बैठकर, आंखें बंद कर लेना ही ध्यान होता है। तो क्या कहीं पर भी एकांत स्थान देखकर अपनी आंखें बंद कर लेने से ध्यान हो जाता है? या फिर ध्यान लगाने के लिए हमें घर का त्याग करके गंगा के तट, हिमालय पर्वत की चोटी, जंगल या फिर गुफाओं आदि में जाना पड़ेगा? दरअसल, आप जहां भी हैं, जो भी काम कर रहे हैं, उसे छोड़ने की जरूरत नहीं है। ध्यान के लिए तो केवल ध्यान को समझने की आवश्यकता है।

भागदौड़ भरी जिन्दगी में ध्यान एक ऐसा आवश्यक माध्यम है, जिसका हमारी दिनचर्या में होना अति आवश्यक है। आज हमारे जीवन में दर्शनों, उपनिषदों व मोक्षदायक ग्रन्थों के स्वाध्याय और ज्ञानी महात्माओं के सान्निध्य का अभाव होता जा रहा है। जिसके कारण अज्ञानी लोग ध्यान के विशेषज्ञ बन बैठे हैं। वे ध्यान के नाम पर कुछ भी जटिल तरीका बताने लगते हैं और हम अपनी आंख और विवेक दोनों को बंद करके उनका अनुसरण करते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहता तो यही है कि उसका कोई भी कार्य असफल न हो, बल्कि सभी कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न हों। लेकिन क्या ऐसा सम्भव है कि हम अपने सभी कार्यों को बिना गलती किए, पूर्ण कर सकते हैं? प्रश्न यह भी है, कि क्या ऐसा कोई नियम अथवा सिद्धांत है, जो हमारे सभी कार्यों को बिना किसी त्रुटि के पूर्ण करने में सहायक हो? सभी प्रश्नों का एक ही प्रामाणिक उत्तर है -'ध्यान'।

सरल शब्दों में ध्यान

सार्वजनिक जीवन में जिस भी स्थान पर अधिक दुर्घटनाओं की संभावनाएं होती हैं, वहां पर एक वाक्य मुख्य रूप से अंकित किया जाता है, सावधानी हटी-दुर्घटना घटी। ये सावधानी ही ध्यान है। संधि विच्छेद करते हैं, तो हमें पता चलता है कि स+अवधान से सावधान शब्द बनता है। इसमें स का अर्थ है 'सहित' और अवधान का ध्यान। इस प्रकार सावधान शब्द का अर्थ हुआ; जो ध्यान के साथ किया जाये। अर्थात् जो पूर्ण मनोयोग और सावधानी के साथ किया जाये। फिर चाहे वह रसोई में भोजन तैयार करना हो या सड़क पर गाड़ी चलाना हम कह सकते हैं कि यह सावधानी ही ध्यान है।

धारणा से ध्यान

योग दर्शन में ध्यान को अष्टांग योग के सातवें अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। इससे पहले के छह अंग निम्न हैं यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार व धारणा। ध्यान हेतु इन सभी अंगों का पालन करना अनिवार्य बताया गया है। ये सभी अंग ध्यान को प्राप्त करने के लिए सीढ़ी का काम करते हैं। ध्यान को समझने से पहले हमें धारणा को समझना पड़ेगा। धारणा को ध्यान का पूर्वाभ्यास कहते हैं। महर्षि पतंजलि के अनुसार; अपने चित्त को किसी स्थान विशेष पर केंद्रित कर देना धारणा कहलाती है। दूसरे शब्दों में चित्त की एकाग्र अवस्था को धारणा कहा गया है। इस प्रकार महर्षि पतंजलि द्वारा बताई गई ध्यान की परिभाषा में ध्यान की अलग से तो कोई विधि बताई नहीं गई है। अर्थात् जहां पर धारणा की गई थी, उसी स्थान पर उस धारणा का लम्बे समय तक बिना किसी बाधा के बने रहना ही ध्यान होता है। वहीं सांख्य दर्शन में महर्षि कपिल कहते हैं - 'मन का सभी विषयों से रहित हो जाना ही ध्यान है।' निस्संदेह चित्त और मन नियमन से ध्यान लगाना संभव होता है। किसका ध्यान करें।

ध्यान के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती कहते हैं कि ईश्वर को छोड़कर अन्य किसी भी पदार्थ का ध्यान नहीं करना चाहिए। साधक को उस अन्तर्यामी परमात्मा के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाना ध्यान है। इसी प्रकार ऋग्वेद कहता है कि ईश्वर में ध्यान करने वाले साधक अपनी इन्द्रियों को समेटकर परमात्मा के आनंद में निमग्न हो जाते हैं। सदा से साधक उस सर्वज्ञ और महान परमेश्वर में मन, बुद्धि और सम्पूर्ण ज्ञान को समर्पित करते आये हैं। परमात्मा की उपासना और ध्यान करने से परमात्मा अपने सामर्थ्य से साधकों की बुद्धि को अपने में युक्त कर लेता है। जिससे साधकों की आत्माओं में दिव्य प्रकाश प्रकट होता है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि योगी एकान्त में रहकर अपने चित्त व आत्मा का संयमन करे, इसके अलावा अन्य किसी प्रकार की कामना का मन में विचार भी न आने दे। इसके साथ-साथ अपने अन्दर से सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने वाले भाव को त्याग कर, अपने अन्त:करण को

ध्यान में लगाने का प्रयास करे।

ध्यान के आसन की तैयारी

गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि योगाभ्यासी साधक को शुद्ध स्थान और समतल भूमि पर सबसे पहले दर्भ अर्थात् घास, मृग की छाल अथवा कम्बल आदि बिछाकर आसन लगाना चाहिए। इस प्रकार आसन के स्थान व आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करने के बाद योगाभ्यासी साधक को अपने चित्त और इन्द्रियों को नियंत्रित करते हुए, मन को एकाग्र करके, स्थिर होकर, पीठ, गर्दन व मस्तक को एक सीध में रखते हुए, दृष्टि को नासिका के अग्र भाग पर टिकाकर, अन्त:करण को शांत करके, भय रहित होकर, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए, मन को संयमित करके, मुझमें अपना चित्त लगाकर, मेरा ध्यान करते हुए मुझमें ही योगयुक्त हो जाएं।

गीता में ध्यान के लिए अभ्यास एवं वैराग्य की बात कही गई है। योगी श्रीकृष्ण ध्यान से पूर्व चंचल मन को नियंत्रित करने की बात करते हुए कहते हैं कि संकल्प करके अपनी सभी कामनाओं व वासनाओं को त्याग कर, मन से सभी इन्द्रियों को वश में कर, धैर्य युक्त बुद्धि से धीरे-धीरे शान्त होता जाना और मन को आत्मा में स्थिर करके कुछ भी चिन्तन न करना। उपयुक्त विधि का पालन करते हुए मन जब भी कभी बाहर जाए तो उसे वहां से रोककर आत्मा के ऊपर लगाएं अर्थात् आत्मा के अधीन करने का प्रयास करते रहें। श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभ्यास एवं वैराग्य से इसे नियंत्रण में किया जा सकता है। ध्यान से पूर्व जो जरूरी

जब तक योग साधक के व्यवहार में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन नहीं आ जाता, तब तक ध्यान सम्भव नहीं है। यमों की तरह ही साधक को ध्यानस्थ होने के लिए शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान का पालन करना अनिवार्य है। साधक को किसी भी ध्यानात्मक आसन का अभ्यास करना चाहिए। प्राणायाम का भी अभ्यास जरूरी है। जब तक प्राण अनियंत्रित होकर चलता रहता है, तब तक हमारा चित्त भी चलता रहता है। लेकिन, जैसे ही हम प्राण को नियंत्रित कर लेते हैं, वैसे ही हमारा चित्त भी नियंत्रण में आ जाता है। प्राणायाम करने से मन की धारणा शक्ति का विकास होता है। इस धारणा शक्ति से ही ध्यान का मार्ग प्रशस्त होता है।

ध्यान की विधि

ऋग्वेद से लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा इस बात की पुष्टि की जा चुकी है कि परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी भी विषय का ध्यान नहीं करना चाहिए। योगदर्शन के समाधिपाद में ईश्वर के स्वरूप और गुणों का वर्णन बहुत सुन्दर तरीके से किया गया है। हमें केवल उसी का अनुसरण करना है। ध्यान हेतु किसी भी ध्यानात्मक आसन में बैठकर आंखों को कोमलता से बंद करें और तीन बार ओऽम शब्द का उच्चारण करें। इसके बाद तीन बार बाह्य प्राणायाम का अभ्यास करना है। प्राणायाम करने के बाद पूरी सजगता के साथ अपने प्राण को दृष्टा भाव से देखना है। जैसे ही प्राण की गति सामान्य हो जाए, वैसे ही ईश्वर का चिन्तन प्रारम्भ कर देना चाहिए।

ईश्वर का चिंतन ईश्वर प्रणिधान के सूत्र के साथ आरम्भ करते हुए परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखना है। इसके बाद हमें चिन्तन करना है कि वह ईश्वर सभी प्रकार के क्लेशों, कर्मों, उनके फलों और संस्कारों से रहित और सभी आत्माओं में विशेष है। वह ईश्वर सभी गुरुओं का गुरु है, क्योंकि वह काल की सीमा से परे है। उसका मुख्य और निज नाम ओऽम है और मैं उस ओऽम का उच्चारण उसके अर्थ की भावना के साथ करते हुए अपने सभी कर्मों को उस ईश्वर में समर्पित करता हूं। इसके बाद साधक को ओऽम शब्द का उच्चारण अथवा स्मरण उसके अर्थ की भावना के साथ करना चाहिए। इस प्रकार उस ईश्वर का चिंतन और ईश्वर प्रणिधान की भावना करने से ईश्वर और जीवात्मा का साक्षात्कार होता है और सभी विघ्नों का भी नाश होता है।

यजुर्वेद भी कहता है; हे कर्म करने वाले प्राणी! ओऽम नाम का स्मरण अर्थात जप कर। मुण्डक उपनिषद् भी कहता है- यह प्रणव अर्थात ओऽम शब्द धनुष है, आत्मा बाण है, ईश्वर उस आत्मा का लक्ष्य है। इसलिए प्रमाद को त्यागकर लक्ष्य का भेदन करो। जिस प्रकार तीर अपने लक्ष्य में प्रवेश करता है, ठीक उसी प्रकार आत्मा भी उस ब्रह्म अर्थात् ईश्वर में प्रवेश करेगी। महर्षि दयानन्द भी ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के उपासना विषय में लिखते हैं- सदा ओऽम नाम का जप और उसी के अर्थ का चिंतन करना चाहिए। ऐसा करने से साधक का मन एकाग्र, प्रसन्न और ज्ञान को यथावत् प्राप्त कर लेता है, जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और ईश्वर भक्ति बढ़ती जाती है। ध्यान की प्राप्ति

ध्यान स्वत: ही घटने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए हमें स्वयं को इस योग्य बनाना पड़ता है कि यह स्वत: ही घटने वाली प्रक्रिया हमारे साथ भी घट जाए। इसके लिए हमें सबसे पहले ध्यान के वास्तविक स्वरूप को जानना आवश्यक है। ध्यान की सफलता के लिए ध्यान में श्रद्धा, उसका निरन्तर और दीर्घकालीन अभ्यास होना अनिवार्य है।

व्यवहार

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

मनोचिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषक

रेप पीड़ित से संवाद

आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है, जरा संभल के

गैंग रेप पीड़िता के साथ बातचीत में संवेदनशीलता और सहानुभूति की जरूरत होती है। यह एक अत्यंत संवेदनशील स्थिति है, जहां पीड़िता का मानसिक, भावनात्मक, और शारीरिक स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित होता है। परिवार, पुलिस और मीडिया तीनों का व्यवहार इस दौरान बहुत महत्वपूर्ण होता है। एक मनोचिकित्सक के रूप में, मैं इन तीनों के लिए कुछ 'डू' और 'डोंट्स' साझा करना चाहूंगा।

1. परिवार के लिए

यह करें

सहानुभूति और समर्थन दें-पीड़िता को बताएं कि आप उसके साथ हैं, उसे दोषी महसूस न होने दें। यह सुनिश्चित करें कि वह सुरक्षित महसूस करे।

धैर्य से सुनें- उसके अनुभवों को सुनें, बिना बीच में रोके या किसी तरह का निर्णय लिए। उसे अपनी बात कहने का पूरा अवसर दें।

प्रोफेशनल सहायता का सुझाव दें-एक मनोचिकित्सक से मदद लेने के लिए उसे प्रोत्साहित करें। मानसिक आघात को दूर करने के लिए पेशेवर सलाह बहुत फायदेमंद हो सकती है।

गोपनीयता का ख्याल रखें- उसकी पहचान और अनुभव की गोपनीयता बनाए रखें। इससे पीड़िता का भरोसा बना रहता है।

यह नहीं करें

दोषारोपण या प्रश्न करना- 'तुम वहाँ क्यों गईं?' या 'तुमने विरोध क्यों नहीं किया?' जैसे सवाल न करें। ये सवाल उसकी पीड़ा को और बढ़ा सकते हैं।

भावनाओं को नजरअंदाज न करें- अगर वह रोती है या गुस्सा होती है, तो उसे शांत होने के लिए मजबूर न करें। उसकी भावनाओं को व्यक्त करने दें।

2. पुलिस के लिए

यह करें

सम्मानजनक रवैया रखें-उसकी बातों को ध्यान से सुनें और उसके प्रति सम्मानजनक व्यवहार रखें। उसे शिकायत दर्ज करने में सहजता महसूस कराएं।

प्रोफेशनल तरीके से पूछताछ करें- पूछताछ करते समय संवेदनशील और सटीक प्रश्न पूछें। उसका विश्वास जीतने की कोशिश करें ताकि वह खुलकर बात कर सके।

महिला अधिकारी की उपस्थिति सुनिश्चित करें-महिला अधिकारी की उपस्थिति में ही पूछताछ की जाए। इससे पीड़िता अधिक सुरक्षित महसूस करेगी।

गोपनीयता बनाए रखें-उसकी पहचान और केस के विवरणों को गोपनीय रखें, जिससे उसे मानसिक शांति मिल सके और समाज का दबाव न झेलना पड़े।

यह नहीं करें

कठोर या दोषारोपण भरे सवाल न पूछें-जैसे 'तुमने खुद को बचाने की कोशिश क्यों नहीं की?' ये सवाल उसकी मानसिक स्थिति को और प्रभावित कर सकते हैं।

अन्य लोगों के सामने जानकारी न साझा करें- उसकी बातें सार्वजनिक न करें, इससे उसकी सुरक्षा और सम्मान पर असर पड़ सकता है।

अनावश्यक कानूनी प्रक्रिया का दबाव न बनाएं-पीड़िता पहले ही तनाव में है, अनावश्यक कानूनी कार्यवाही का दबाव न डालें। उसे पूरी जानकारी और विकल्पों से अवगत कराएं।

3. मीडिया के लिए

यह करें

गोपनीयता का सम्मान करें-पीड़िता की पहचान उजागर न करें। उसकी सुरक्षा और सम्मान को बनाए रखने के लिए नाम, फोटो या कोई भी पहचान देने वाली जानकारी न प्रकाशित करें।

संवेदनशीलता के साथ रिपोर्ट करें-रिपोर्टिंग करते समय संवेदनशील और सहानुभूति भरी भाषा का प्रयोग करें। समाचार को सनसनीखेज बनाने से बचें।

सकारात्मक संदेश फैलाएं: समाज में जागरूकता फैलाने के लिए अपने प्लेटफॉर्म का उपयोग करें। महिलाओं के अधिकार और उनके प्रति सम्मान को बढ़ावा दें।

पीड़िता की बातों को सही तरीके से प्रस्तुत करें-अगर वह अपने अनुभव साझा करना चाहती है, तो उसकी कहानी को बिना तोड़-मरोड़ के पेश करें।

यह नहीं करें

***सनसनीखेज हेडलाइंस न बनाएं**

*उसकी पीड़ा को चौंकाने वाले तरीके से पेश न करें। इससे समाज में गलत संदेश जा सकता है।

उकसाने वाले सवाल न पूछें: जैसे 'आपको कैसा महसूस हो रहा है?' या 'क्या आप उसे माफ करेंगी?' ऐसे सवाल उसकी भावनाओं का शोषण करते हैं।

अनुमान न लगाएं: केवल तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग करें। झूठी या बिना पुष्टि की जानकारी देने से बचें।

निष्कर्ष

गैंग रेप की घटना के बाद, पीड़िता और उसके परिवार के लिए यह एक मानसिक, शारीरिक और सामाजिक संकट का समय होता है। परिवार, पुलिस और मीडिया, तीनों का कर्तव्य है कि वे इस कठिन समय में पीड़िता को एक सुरक्षित और सम्मानजनक माहौल प्रदान करें। सही व्यवहार और संवेदनशीलता से पीड़िता को न केवल न्याय की राह पर ले जाया जा सकता है, बल्कि उसे जीवन में फिर से आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दी जा सकती है। यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसमें हम सबको अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

सेहत

बाल मुकुन्द ओझा

लेखक स्तंभकार हैं।

चिंताजनक हैं बुजुर्गों की बीमारियों के नए खुलासे

देश में बुजुर्ग आबादी के बारे में हो रहे नित नए खुलासे चिंतित करने वाले है। हेल्पेज इंडिया के एक ताज़ा सर्वे पर यकीन करें तो देश में 54 प्रतिशत बुजुर्ग डायबिटीज, ह्रदय, सांस रोग, बीपी, गठिया और पेट सम्बन्धी विभिन्न बीमारियों में से कम से कम दो बीमारी से पीड़ित है। रिपोर्ट के मुताबिक देश के दस राज्यों के 20 शहरों के पांच हज़ार से अधिक बुजुर्गों पर किये गए सर्वे में 26 प्रतिशत का किसी न किसी असंक्रामक बीमारी का उपचार किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार 20 प्रतिशत बुजुर्ग बीमारी के बावजूद इलाज से मरहूम रहे। स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी 60 साल से अधिक आयु के साढ़े सात करोड़ बुजुर्गों के किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त होने की पुष्टि की थी । दूसरी तरफ मोदी सरकार ने 70 साल से अधिक के वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयुष्मान भारत के तहत पांच लाख तक के मुफ़्त इलाज देने की घोषणा की है। सरकार की ओर से बताया गया कि इस योजना से साढ़े चार करोड़ परिवार लाभान्वित होंगे, जिसमें 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिक हैं। आयुष्मान भारत योजना हमारे देश की एक महत्वपूर्ण योजना है । इस योजना के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा प्रत्येक नागरिक को स्वास्थ्य लाभ उपलब्ध कराया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत अब विभिन्न आर्थिक स्थिति और सामाजिक स्थिति वाले बुजुर्गों को भी आयुष्मान भारत योजना की जन आरोग्य योजना से जोड़ा जा रहा है और उन्हें निःशुल्क 5 लाख रुपए तक का कैशलेस इलाज उपलब्ध करवाया जा रहा है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के आंकड़ों के मुताबिक देश में साल 2021 में बुजुर्गों की संख्या 13.8 करोड़ पर पहुंच गयी है। इनमें 6.7 करोड़ पुरुष और 7.1 करोड़ महिलाएं शामिल हैं। बुजुर्गों की आबादी बढ़ने की वजह मृत्यु दर में कमी आना बताई गई है। इस अध्ययन में 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र वाले लोगों को बुजुर्ग माना गया है। सांख्यिकी अध्ययन में कहा गया है कि 2011 में भारत में बुजुर्गों की आबादी 10.38 करोड़ थी, जिसमें 5.28 करोड़ पुरुष और 5.11 करोड़ महिलाएं शामिल थीं। वही साल 2031 में बुजुर्गों की संख्या 19.38 करोड़ पर पहुंचने का अनुमान है। बुजुर्गों की बढ़ती आबादी के मधे नज़र यह देखना भी जरुरी है की बुजुर्ग आज किस स्थिति में अपना जीवन यापन कर रहे है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में प्रत्येक पांच में से एक बुजुर्ग अकेले या अपनी पत्नी के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है। यानी वह परिवार नामक संस्था से अलग रहने को विवश है। ऐसे बुजुर्गों में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। अशिक्षित बुजुर्गों की हालत और भी ज्यादा दयनीय है। अधिकतर बुजुर्ग डिप्रेशन, आर्थराइटिस, डायबिटीज एवं आंख संबंधी बीमारियों से ग्रस्त हैं और महीने में औसतन 15 दिन बीमार रहते हैं। सबसे ज्यादा परेशानी उन वरिष्ठ नागरिकों को होती है, जिनके पास आय का कोई स्रोत नहीं है। हेल्पेज इंडिया द्वारा जारी एक रिपोर्ट बताती है कि देश के लगभग 10 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों में से पांच करोड़ से भी ज्यादा बुजुर्ग आए दिन भूखे पेट सोते हैं। देश की कुल आबादी का आठ फीसदी हिस्सा अपने जीवन की अंतिम वेला में सिर्फ भूख नहीं, बल्कि कई तरह की समस्याओं का शिकार है। एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में आगामी 2030 तक प्रत्येक 6 में से एक व्यक्ति की आयु 60 वर्ष से ज्यादा होंगी। हमारे देश की बात करें तो भारत की बुजुर्ग आबादी अगले दशक में 41 प्रतिशत तक बढ़ जाने का अनुमान है, यानी 2031 तक इस देश में 194 मिलियन वरिष्ठ नागरिक हो जाएंगे। यह जानकारी एक सरकारी रिपोर्ट में दी गई है। दुनिया के कुछ देश बुजुर्गों को एक ही छत के नीचे स्वास्थ्य सहित सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएं सुलभ करा रहे है। मगर हमारे देश में बुजुर्गों को पेंशन की आंशिक सुविधा जरूर दी जा रही है मगर अन्य आवश्यक सुविधाओं की दृष्टि से हम बहुत पीछे है।

विश्व सामाजिक रिपोर्ट 2023 के मुताबिक लोग पहले की तुलना में कहीं अधिक वृद्धावस्था तक जी रहे हैं। लेकिन, साथ ही पेंशन, जीवन-व्यापन और स्वास्थ्य देखभाल की कीमतों में भी भारी उछाल आया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि जन्म से ही समान अवसरों को बढ़ावा देकर, हर व्यक्ति को बेहतर स्वास्थ्य के साथ वृद्ध होने पर भी बेहतर सुविधाएं दी जा सकती हैं, जिससे देश फिर से लाभान्वित हो सकते हैं। रिपोर्ट में सिफारिश की गई है कि देशों को लंबे समय से चली आ रही नीतियों और आजीविका और काम से जुड़े तरीको पर फिर से विचार करना चाहिए। अब समय आ गया है जब 65 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों की संख्या सदी के मध्य तक दोगुनी से अधिक होने का अनुमान है।

बैतूल-सारणी स्टेट हाईवे पर बंजारी माई के पास हुआ हादसा

अनियंत्रित होकर ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी, दो की मौत, 15 मजूदर घायल

संजय द्विवेदी, बैतूल।

बैतूल- सारणी स्टेट हाईवे पर ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से उसमें सवार दो मजदूरों की मौत हो गई, जबकि 15 लोग घायल हो गए। ट्रैक्टर में लगभग 21 लोग सवार थे। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसा रविवार सुबह 9.30 बजे का बताया जा रहा है। दरअसल सभी मजदूर बैतूल में कन्याकुमारी से मजदूरी कर दीपावली मानने गांव लौट रहे थे, तभी यह हादसा हो गया। एएसपी कमला जोशी ने बताया कि सारणी क्षेत्र के बाकुड़ और दुलारा में रहने वाले मजदूर पिछले साल 11 नवंबर को कन्याकुमारी के पास अलघर स्थित नमक फैक्ट्री में काम करने

गए थे। रविवार को सुबह सभी मजदूर त्रिकुल एक्सप्रेस से बैतूल रेलवे स्टेशन पर उतरकर अपने गांव जा रहे थे। बैतूल के कमानी गेट के पास ट्रैक्टर-ट्रॉली लेकर जा रहे एक ड्राइवर ने उन्हें आमढाना तक फ्री छोडने को कहा तो सभी ट्रॉली में सवार हो गए। ट्रैक्टर-ट्रॉली आमढाना जाते समय बंजारी माई के पास अनियंत्रित होकर पलट गई। इस हादसे में बलराम पिता भोला (25) निवासी डुलारा और श्रवण पिता चंदन (24) डुलारा की मौत हो गई, जबकि 12 लोगों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में सभी की हालत स्थिर है। इनमें दो को आईसीयू में भर्ती कराया गया है। इधर हादसे की सूचना मिलते ही बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी और पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झरिया और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी मौके पर पहुंची। अधिकारियों ने हादसे के बारे में विस्तार से जानकारी ली। इसके साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

ट्रैक्टर-ट्रॉली का ड्राइवर भागा

ट्रैक्टर-ट्रॉली हादसे का शिकार होते ही कूदकर भाग गया। मजदूरों के मुताबिक बंजारी माई के पास उसने ट्रैक्टर को न्यूट्रल कर दिया था। इसी वजह से मोड पर वह अनियंत्रित हो गया। इसी दौरान सामने से आ रहे वाहन से ओवरटेक करते समय वह ट्रैक्टर संभाल नहीं पाया। ट्रॉली के पलटते ही मजदूर उसमें फंस गए, जिन्हें आने-जाने वाले राहगीरों ने बाहर निकालकर एंबुलेंस को कॉल किया। बताया जा रहा है कि सभी मजदूर सारणी इलाके के बाकुड और दुलारा गांव के रहने वाले है। मजदूर नंदलाल ने बताया कि लक्ष्मी पूजा के बाद उन्हें वापस काम पर लौटना था।

हादसे में यह हुए घायल, दो आईसीयू में भर्ती : इस हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, वहीं 12 मजदूर घायल हो गये, जिनमें से 2 की हालत गंभीर होने पर आईसीयू में भर्ती किया है। हादसे में नंदलाल पिता जिन्दु उईके (27) डुलारा, प्रदीप पिता अमरलाल कुमरे (24) बाकुड़, मल्लू पिता नानू उई के (60) बाकुड़, बादल पिता मोती मसकोले(40) बाकुड़, रविकेश पिता रतुलाल नर्रे (27) दुलारा, नंदकिशोर पिता प्यारे उईके (38) डुलारा, कैलाश पिता भग्गू काकोरिया (24) दुलारा, आकाश पिता रामसिंह (23) बाकुड़, नंदराम पिता प्यारे उईके (40) दुलारा, सुखमत पिता मंसा मर्सकोले (25) बाकुड, संजू पिता चंदन काकोडिया (45) डुलारा, शिवचरण पिता बिरसु (20) दुलारा घायल हो गये।

सड़क हादसे के घायलों से मिलने पहुंचे विधायक, कलेक्टर

बैतूल से सारणी मार्ग पर बंजारी माई के समीप हुए सड़क़ हादसे में घायलों से मिलने बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा बाई उइके, कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी रविवार को जिला अस्पताल पहुंचे। उन्होंने घायलों से चर्चा कर सिविल सर्जन जिला चिकित्सालय को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। इसके बाद कलेक्टर श्री सूर्यवंशी व एसपी श्री निश्चल झारिया ने घटनास्थल पर पहुंचकर निरीक्षण किया। इस अवसर पर एडिशनल एसपी, एसडीएम सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। सिविल सर्जन डॉ अशोक बरंगा ने बताया कि सडक़ हादसे में बलराम (25) और श्रवण (24) की गंभीर चोट आने से मौके पर ही मौत हो गई तथा 15 मजदूरों को गंभीर हालत में जिला अस्पताल लाया गया।

मृतकों को दो-दो लाख, घायलों को 50-50 हजार देने की घोषणा

बैतूल-सारणी स्टेट हाईवे पर ट्रैक्टर ट्राली हादसे को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी दुःख व्यक्त किया है। सीएम ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि 'बैतूल जिले अंतर्गत रानीपुर के करीब मजदूरों से भरे ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से दो मजदूरों की मृत्यु एवं अन्य कुछ के गंभीर रूप से घायल होने का समाचार मिला है। घटना में हताहत हुए लोगों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। जिला प्रशासन को घायलों के उपचार की समुचित व्यवस्था सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ करने के निर्देश दिए थे। सीएम डॉ. यादव ने मृतकों के परिजनों और घायलों को मुआवजा देने की घोषणा की है। सीएम ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया और मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये की सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा की। इसके अलावा रेड क्रॉस सोसाइटी के माध्यम से मृतकों को 25-25 हजार रुपए तथा घायलों को 10-10 हजार रुपए दिए जायेंगे।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार 3 की मौत

बैतूल। बैतूल-आठनेर मार्ग पर शनिवार रात ट्रक ने बाइक सवारों को टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार तीन युवकों की मौत हो गई। हादसा भरकाबाड़ी जोड़ पर शनिवार रात 12 बजे हुआ। पुलिस सूत्रों के मुताबिक बैतूल से करीब 13 किमी दूर चुरनी गांव का रघुनाथ पिता मुरत सरियाम (35), विजय पिता मन्नू परपाची (35) निवासी चिचढाना और कृष्णा पिता चन्द्र किशोर धुर्वे (20) बैतूल आठनेर सडक़ मार्ग से लौट रहे थे। भरकावाडी जोड़ के पास तीनों की बाइक और आयशर ट्रक की टक्कर हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही बैतूल बाजार पुलिस ने एंबुलेंस बुलवाकर हादसे में घायल हुए युवकों को जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां तीनों को मृत घोषित कर दिया गया। बताया जा रहा है कि तीनों एक साथ फर्नीचर बनाने का काम करते थे। दीपावली त्योहार के चलते वे देर रात तक काम करते रहे और घर लौटते समय हादसे का शिकार हो गए। पुलिस ने मौके से मृतक रघुनाथ की स्पलेंडर बाइक बरामद की है। जबकि महाराष्ट्र पंजीकृत आयशर ट्रक को जब्त कर लिया गया है। घटना के बाद ड्राइवर मौके से फरार हो गया।

त्यौहारों को देखते हुए यातायात पुलिस ने बनाया नया ट्रॉफिक प्लान

कट-ऑफ पॉइंट बनाये, गणेश चौक से लक्ष्मी चौक मार्ग रहेगा वन-वे

बैतूल। दीपावली पर्व पर बाजार में भीड़ नियंत्रण के लिए यातायात पुलिस बैतूल ने नया ट्रैफिक प्लान जारी किया है। ट्रैफिक अमले ने इसके लिए मोटर साइकिल पार्टी भी तैयार की है। शहर के कई हिस्सों में कट ऑफ प्वाइंट बनाए गए हैं। ट्रैफिक इंचार्ज सूबेदार गजेन्द्र केन ने बताया कि बाजार क्षेत्रों में यातायात को व्यवस्थित करने के लिए मोटर साइकिल पार्टी का लगातार भ्रमण करेगी। कोठी बाजार में रविवार से आगामी त्योहारों तक, कोठी बाजार क्षेत्र में दोपहर 2 बजे से रात 9 बजे तक चार पहिया एवं लोडिंग वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। जमा मस्जिद के पास से कट-ऑफ पॉइंट लगाकर वाहनों को परिवर्तित मार्ग पर भेजा जाएगा। थाना चौक से लक्ष्मी चौक की ओर आने वाली रोड पर भी इसी प्रकार की व्यवस्था रहेगी।

सीमेंट रोड सराफा बाजार में शाम 5 बजे से रात 9 बजे तक सराफा बाजार की सीमेंट रोड पर मोटर साइकिल का प्रवेश निषेध रहेगा। इस मार्ग पर भी यातायात को नियंत्रित करने के लिए दो कट-ऑफ पॉइंट लगाए जायेगे। यातायात पुलिस के अनुसार बाजार में आने वाले दोपहिया वाहन चालक अपने वाहनों को नगर पालिका परिसर में पार्क कर सकते हैं। गणेश चौक से लक्ष्मी चौक की ओर जाने वाली सडक़ को वन-वे किया गया है। यातायात पुलिस ने नागरिकों से अपील है कि बाजार में यातायात को सुगम बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें। यातायात नियमों का पालन कर स्वयं एवं दूसरों को सुरक्षित बनाए।

सुखदेव पांसे उपाध्यक्ष, निलय एवं रामू पीसीसी महासचिव बने

बैतूल। म.प्र. कांग्रेस कमेटी द्वारा बैतूल जिले के कांग्रेस नेता एवं पूर्व केबीनेट मंत्री सुखदेव पांसे को प्रदेश उपाध्यक्ष, निलय डागा एवं रामू टेकाम को प्रदेश महासचिव बनाया गया है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा हाल ही में घोषित हुई प्रदेश कार्यकारिणी में बैतूल जिले को भरपूर नेतृत्व प्रदान करने पर बैतूल जिले के समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओ द्वारा प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, नेताप्रतिपक्ष राहुल गांधी एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ जी के प्रति आभार व्यक्त किया है एवं नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी। बधाई देने वालों में डॉ. पीआर बोडखे, अमरचंद अग्रवाल, कमल सोनी, किशोरसिंह परिहार, हॉजी शमीम खान, लल्लुप्रसाद सोनी,

भाऊराव गांवडे, तुलसीदास मानकर, संजय यादव, डॉ. विजय देशमुख, जगदीश परिहार, मिश्री धाकड़ शिवकुमार माहोरे,सहित अन्य कांग्रेसी शामिल है।

पेड़ में फंसा तेंदुआ, मुलताई के निरगुड में कुंए में गिरी लोमड़ी

- सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची, किया रेस्क्यू

बैतूल। दक्षिण वन मंडल के सावलमेंढ़ा रेंज के जंगल में रविवार को एक तेंदुआ पेड़ में फंस गया। सूचना के बाद वन वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। वन परिक्षेत्र के रेंजर मानसिंह परते ने बताया कि सुपाका से 1 किलोमीटर दूर और खोमई से 3 किलोमीटर दूर अंदर जंगल के कंपार्टमेंट नंबर 729 में सुबह जंगल जाने वाले ग्रामीणों ने किसी वन्य प्राणी कर दहाड़ सुनी। इसके बाद मौके पर जाकर देखा तो वहां एक तेंदुआ फंसा हुआ था। सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और तेंदुए के रेस्क्यू के लिए सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की टीम मौके पर बुलवाई गई है। एसडीओ फॉरेस्ट भैंसदेही देवानंद पांडे ने बताया कि तार में फंसे तेंदुए का महाराष्ट्र की मेलघाट टाइगर रिजर्व टीम ने रेस्क्यू किया। इसके पहले उसे ट्रेंकुलाइज कर बेहोश किया गया। तेंदुए को अब सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के दल को सौंप दिया गया है।

15 वर्षों से फरार स्थाई वारंटी गिरफ्तार, न्यायालय में पेश

बैतूल। 15 वर्षों से फरार स्थाई वारंटी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसे न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बैतूल बाजार थाने के अपराध क्रमांक 65/09 धारा 394, 328 भादवि के तहत आरोपी लिक्कड उर्फ प्रियेश पिता बापूराव तापडे (25 वर्ष), निवासी कापुस तल्ही, थाना रहिमापुर, जिला अमरावती, महाराष्ट्र के विरुद्ध मामला पंजीबद्ध किया गया था। आरोपी पर लूट और नशीले पदार्थ का उपयोग कर अपराध करने का आरोप था। न्यायालय बैतूल ने 17 दिसंबर 2009 को उसके विरुद्ध स्थाई वारंट जारी किया था। आरोपी पिछले 15 वर्षों से फरार था और पहचान छिपाने के लिए नाम व वेश-भूषा बदलकर महाराष्ट्र में निवास कर रहा था। 26 अक्टूबर को बैतूल बाजार पुलिस ने सूचना तंत्र और तत्परता से कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। इस कार्रवाही में

थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे, प्रआर अशोक झरबडे, प्रआर अजय, चालक प्रआर राजेश, एवं आरक्षक लीलाधर की सराहनीय भूमिका रही है।

नौवें आयुर्वेद दिवस के अवसर पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर 600 से अधिक मरीजों की हुई स्वास्थ्य जांच

बैतूल। समाज सेवा के क्षेत्र में बैतूल के भारत भारती स्थित गैर सरकारी संस्था ओम स्वास्थ एवं शिक्षा परिषद द्वारा संचालित ओम आयुर्वेदिक महाविद्यालय ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए निःशुल्क व निस्वार्थ सेवा कार्य शुरू किए हैं। इसी कड़ी में रविवार 27 अक्टूबर को महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा शहीद भवन कलेक्ट्रेट रोड पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के उद्घाटन समारोह में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल व बैतूल नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर सहित अन्य गणमान्य नागरिक भी उपस्थित हुए। शिविर में आने वाले नागरिकों व चिकित्सकों ने आयुर्वेद को अपनाना है और भारत को स्वस्थ बनाना हैं, यह नारा देते हुए आयुर्वेद को अपनाकर स्वस्थ रहने की प्रतिज्ञा ली। इस दौरान न सिर्फ लगभग 600 से अधिक मरीजों की स्वास्थ्य जांच हुई इनमें से कुछ चिन्हित मरीजों को

ओम आयुर्वेद तथा गंभीर मरीजों को वर्धा के आचार्य विनोबा भावे रुग्णालय में पूर्ण इलाज के लिए रेफर किया गया। जिन्हें कुछ दिनों में निशुल्क बस सुविधा से वर्धा भेजा जाएगा। ओम आयुर्वेद महाविद्यालय का यह कदम निश्चित ही आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले के लिए भविष्य में मील का पत्थर साबित होगा। इस शिविर के सफल आयोजन में संस्था के सचिव शिवकिशोर पाल व कोषाध्यक्ष सोनू पाल समेत समस्त चिकित्सक, विद्यार्थियों, पत्रकार, समाज सेवियों तथा पार्षद व कर्मचारीयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इनके अथक प्रयास से जिले के नागरिकों को स्वास्थ्य लाभ मुहैया करवाया गया।

एनएसएस ने दिवाली पर स्वच्छता ही सेवा का दिया संदेश

रैली निकालकर किया स्वच्छता के प्रति जागरूक

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस जेएच कॉलेज में मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के आदेश के परिपालन में यह दीवाली माय भारत एवं स्वभाव, स्वच्छता, संस्कार और स्वच्छता के अंतर्गत रैली एवं स्वच्छता अभियान चलाया। जिसमें एनएसएस के जिला संगठक डॉ. सुखदेव डोंगरे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गोपाल प्रसाद साहू की उपस्थिति में महाविद्यालय से रेल्वे स्टेशन तक रैली का आयोजन किया गया। रैली के माध्यम ने स्वच्छता का संदेश दिया एवं रेल्वे स्टेशन पर स्वच्छता के ऊपर कर्मचारियों से चर्चा की गई और स्वच्छता अभियान चलाया। इस मौक पर डॉ.सुखदेव डोंगरे और डॉ.गोपाल

प्रसाद साहू ने कहा की दीपावली में लक्ष्मी पूजन किया जाता है और इससे जुड़ा हुआ है कि जहां स्वच्छता होती है वहां लक्ष्मी जी का वास होता है। यह कार्यक्रम दलनायक आयुष घिंडोडे एवं दलनायक अंजली नागोरे के नेतृत्व में किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में इस्त्याक अली, नीतिन पवार, दयाराम चिचाम, विशाल अमरूते,आयुष नागोरे, अरविन्द गजाम, अजय धुर्वे, अनुज धुर्वे, रिना उइके, नरबदी धुर्वे, पार्थ पिम्पलापुरे, शिवानी भोरसे, अमित ईडपाचे, संजना आहके, अंजली उइके, रमेलती आहके, खुशी पारखे, सोनाली साहू, कविता वरकडे, कशिश शेषकर, सुलोचना नर्रे, मनीषा पद्राम स्टेशन स्टॉफ का सराहनीय योगदान रहा।

भारत भारती में ऐतिहासिक महानाट्य वीरांगना दुर्गावती का सफल मंचन

जीवंत युद्ध दृश्यों और प्रभावी संवादों ने दर्शकों का मन मोहा

बैतूल। भारत भारती आवासीय विद्यालय द्वारा वार्षिकोत्सव-2024 के अंतर्गत गोंडवाना की महारानी दुर्गावती की 500वीं जयंती पर ऐतिहासिक महानाट्य वीरांगना दुर्गावती का सफल मंचन किया गया। दो घण्टे के इस रोमांचकारी कथानक ने हजारों दर्शकों को एकटक देखते हुए बांधे रखा। तीन मंजिला किलानुमा मंच पर नृत्य, युद्धकला के दृश्य, किले के बुर्ज पर जलती मशालें, सूत्रधार के रोचक कथानकों, विशेष प्रसंगो पर आतिशबाजी, युद्ध के समय मैदान पर दौड़ते घोड़े किसका मन नहीं मोह लेंगे। भारत भारती विद्यालय के 300 विद्यार्थी कलाकारों द्वारा किया गया यह महानाट्य बैतूल जिले के हजारों दर्शकों के मन मस्तिष्क में अमिट छाप छोड गया। महानाट्य मन्चन के पूर्व कार्यक्रम के आमंत्रित अतिथियों केन्द्रीय जनजाति मामलों के मन्त्री व बैतूल सांसद दुर्गादास उइके, जनजाति शिक्षा के राष्ट्रीय सह संयोजक बुधपाल सिंह ठाकुर, विद्या भारती के प्रादेशिक सह सचिव डॉ. नीलाभ

तिवारी, प्रान्तीय सह संगठन मन्त्री अनिल अग्रवाल, विद्या भारती मध्यभारत के नगरीय शिक्षा प्रमुख डॉ. रामकुमार भावसार, भारत भारती के अध्यक्ष सुजीत शर्मा, संघ के विभाग प्रचारक नरेन्द्र यादव, भारत भारती के सचिव व मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर ने सर्वप्रथम विद्यालय के सामाजिक सरोकार के कार्यों की प्रदर्शनी को देखा तथा मंच पर रानी दुर्गावती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर मां सरस्वती की पूजा की। मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री दुर्गादास उइके ने इस अवसर पर कहा कि महारानी दुर्गावती ने गोंड वंश का नाम ऊँचा किया है। उन्होंने मुगलों से अपने युद्ध कौशल के द्वारा परास्त कर गोंडवाना राज्य और संस्कृति की रक्षा की है तथा अपने बलिदान के द्वारा देश और धर्म पर मर मिटने का संदेश दिया है।

युवाओं को श्रेष्ठ भारत एवं सम्पन्न भारत का निर्माण करना है: श्री रामचंद्र जी

देवास । देवास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रतिवर्ष निकला जाने वाला युवा स्वयंसेवको का पथसंचलन इस वर्ष भी रविवार की शाम को सयाजी द्वार स्थित लालगेट के राजा परिसर से निकला। संचलन हेतु आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता अखिल भारतीय शारीरिक टोली सदस्य श्री राम चन्द्र जी रहे,मुख्य अतिथि सेंट्रल इंडिया एकेडमी के संचालक श्री चरणजीत सिंह जी अरोरा एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता देवास नगर के माननीय संघचालक श्री राजेश जी अग्रवाल ने की। मुख्य वक्ता श्री रामचन्द्र जी ने युवा स्वयंसेवको को सम्बोधित करते हुए कहा की युवाओं को श्रेष्ठ भारत एवं सम्पन्न भारत का निर्माण करना है,इस हेतु व्यक्तित्व निर्माण का क्रम सदैव जारी रखना है। आप ने बताया की परिस्थितियां जैसी भी हो, हमको विजय होना है,क्योंकि हिन्दू की विजय,मानवता की विजय है,भारत की विजय,विश्व की विजय है,भारत की प्रवत्ति है कि स्वंय के साथ विश्व को भी सुखी रखना। हमने कोरोना की वैक्सीन बनाई और विश्व के स्वास्थ चिंता की,विश्व आज भारत की संस्कृति,कुटुंब व्यवस्था,नागरिक अनुशंसा का अनुसरण करने हेतु लालायित है, युवाओं का यह दायित्व है कि विश्व को मानव कल्याण के इन विषयों से परिचय करवाना।

संचलन सयाजी द्वार स्थित लालगेट के राजा परिसर से प्रारंभ होकर तहसील चौराहे, माहेश्वरी नर्सिंग होम,करीम नर्सिंग होम,अंबेडकर प्रतिमा, जबरेश्वर महादेव मंदिर,पीठा रोड,तीन बत्ती चौराहा, मनकामनेश्वर मंदिर,गांजा भांग चौराहा,नावेल्टी चौराहा, केदारेश्वर महादेव चौराहा,मीरा बावड़ी,शनि मंदिर,कोठारी नर्सिंग होम,इंदिरा प्रतिमा से होते हुए लालगेट के राजा परिसर पर समाप्त हुआ। युवा स्वयंसेवको के इस पथसंचलन में सैकड़ो युवा स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। संचलन के लिए नगर में उत्साह का वातावरण रहा। विभिन्न सामाजिक धार्मिक एवं व्यवसायिक संगठनों ने पुष्प वर्षा कर संचलन का स्वागत किया।

अखिल भारतीय युवा गुर्जर महासभा के पुनः जिलाध्यक्ष नियुक्त

सुबह सवेरे सोहागपुर । आज इंदौर में अखिल भारतीय युवा गुर्जर महासभा का सम्मेलन संम्पन्न हुआ।इस बैठक में अखिल भारतीय गुर्जर महासभा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉक्टर रामकिशोर दोगने विधायक हरदा ,प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्रसिंह पटेल गाडरवारा, युवा प्रदेश अध्यक्ष सोनू गुर्जर पहलवान दूधिया आदि प्रदेश की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया। इस गठन में समीपवर्ती ग्राम किवलारी के राम हजूर पटैल को पुनः नर्मदापुरम जिले का अध्यक्ष नियुक्त किया है। आपने सभी पदाधिकारियों का नियुक्ति करने पर आभार व्यक्त किया है। इसके साथ आपने जिला के सामाजिक बन्धुओं को आश्वस्त कि मैं समाज हित के कार्यों में आगे आकर समाजिक हितों के लिए कंधे से कंधा मिलाकर हमेशा सहभागी रहूंगा।

सोशल मीडिया पर जागरूक पहल..

सीवरेज कंपनी के मुखिया पर पब्लिक न्यूसेंस क्रिएट का मामला दर्ज कर एसडीएम न्यायालय में तलब करें : शिव मोहन सिंह

नर्मदापुरम । सोशल मीडिया कुछ सार्थक और छिपी सच्चाई को उजागर करने में बेहतर भूमिका निभा सकता है बशर्ते आप समाचार-पत्रों का गंभीरता से अवलोकन कर उन जिम्मेदारों को आईना दिखा सकते हैं। जिन्हें आईना दिखाने में जिम्मेदार गैरजिम्मेदार हो जाते हैं। सोशल मीडिया का प्लेटफार्म जागरूकता की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे हाल में ही सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर पांच दिन पहले भगवताचार्य सोमनाथ शर्मा चलाई जा रही सुरभि गोशाला को लेकर लिखी गई एक समाचार पत्र की खबर का जोरदार तरीके से खंडन करने की जागरूकता दिखाई पं शर्मा ने लिखा कि ये सब करने से हमारी सुरभि गौशाला की गौसेवा नही रुकेगी। इस तरह की राजनीति से रोज हम लोगों का पाला पड़ता है। मंदिर हो या चबूतरा हो गौशाला के अतिक्रमण की हुई भूमि से सब हटेगा चाहे तुम रोज इस तरह की गलत खबर छापों। ऐसे ही संक्रमित मानसिकता वाले हिंदुओ के कारण गौशालाएं नही चल पातीं पर हमारी सुरभि गौशाला की गौसेवा को इससे कोई फर्क नही पड़ेगा हमारी गौशाला में गायों को दी जा रहीं सेवाओं से सब परिचित है। गन्दी मानसिकता वाले लोगों को भगवान सद्बुद्धि दे और गायों की सेवा में विघ्न डालने वाले को दंड तो मिल ही जायेगा। इसके साथ ही भगवताचार्य के संवाद वाली टिप्पणी सोशल मीडिया पर धूम मचाती रही और आज भारतीय किसान संघ के शिव मोहन सिंह ने सीवरेज कंपनी की चलाई जा रही तानाशाही पर प्रशासन की चुप्पी को लेकर प्रशासन को आईना दिखाने की जागरूकता दिखाई श्री सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा कि सीवरेज कंपनी की तानाशाही के समाचार पढ़ते-पढ़ते आंखें थक गई हैं और सुनते-सुनते कान पक गए हैं खोजी पत्रकारों की मेहनत पर पानी फिर रहा है लगता ही नहीं जिले में प्रशासन नामक कोई चीज है। इस कंपनी की तानाशाही के कारण आम जनता त्राहि त्राहि कर रही है। अनुविभागीय अधिकारी अर्थात एसडीएम नर्मदा पुरम तुरंत इस प्रकरण में संज्ञान लेकर पब्लिक न्यूसेंस क्रिएट करने का मामला दर्ज कर तत्काल अपने कोर्ट में संबंधित कंपनी के मुखिया को तलब कर आम जनता को राहत पहुंचाएं..जनहित के दबने और दबाएं जाने वाले मामलों की कलई ऐसी जागरुकता से आने पर वास्तव में जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों को उनकी जिम्मेदारी का सच सामने रखने को महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भौतिक जगत भगवान के विस्मृति का स्थान है : सव्यसाची प्रभु

नर्मदापुरम । एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर परिवार में आज कृष्ण भक्तों को व्यासगादी से संबोधित करते हुए भोपाल से पधारे सव्यसाची प्रभु जी ने कहा कि भौतिक जगत ही भगवान के विस्मृति का स्थान है। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक जगत का सृजन नहीं होता उन्होंने भौतिक जगत का ही सृजन होता बताया और कहा कुछ लोग दुष्प्रचार करते हैं कि कृष्ण काल्पनिक है, जबकि भगवान कृष्ण का परिचय है कि कृष्ण कौन है। उन्होंने आगे बताया कि सृष्टि करने वाला सृष्टि का भाग नहीं हो सकता कृष्ण आदि पुरुष है और उनसे यह पूरा ब्रह्मांड चलता है। प्रभु जी ने बताया कि हम सब भगवान के बहुत धनिष्ट है, हम भगवान के साथ रह सकते हैं, बैठ सकते हैं, खा सकते हैं, खेल सकते हैं, उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक जगत में जाने का होना चाहिए। माता कुंती के उदाहरण के माध्यम से समझाया उन्होंने कहा भगवान की सेवा के लिए कष्ट लेना भक्त के लिए दुख नहीं होता। प्रभु जी ने बताया कि जिसे कोई भी भौतिक प्रगति रोक नहीं सके वह भक्ति का लक्षण होता है। भक्ति की प्रगाढ़ता को लेकर प्रभु जी ने कहा कि प्रगाढ़ भक्ति में भौतिक प्रगति बाधा नहीं बन सकती है। रविवार का दिन इस्कॉन मंदिर परिवार में कृष्ण भक्तों का उत्सवी दिन होता है। सुबह पांच बजे से कृष्ण आराधना के लिए एकत्रित होने भक्तों की मंदिर में शाम कब हो जाती पता नहीं चल पाता, कृष्ण भक्ति करते हुए जिनके चहरों पर आध्यात्मिक प्रगति की चमक और ईश्वर भक्ति की प्रगाढ़ता झलकती है। जो मंदिर में भक्तों के साथ कृष्ण की आराधना कर अलौकिक आनंद प्राप्त करते। कार्तिक मास में भगवान कृष्ण की भक्ति करते हुए आज उन्होंने दीप-दान करते हुए काफी सुकून महसूस किया, मंदिर में आज दोपहर की आरती के स्थान पर दीप-दान आयोजित किया, जिसमें शताधिक माताएं और पुरुष भक्तों ने भगवान कृष्ण की प्रसन्नता के लिए दीप-दान किया, तत्पश्चात सभी भक्तों ने मंदिर में प्रसादम ग्रहण किया।

चित्रकूट के विकास में कोई कमी नहीं रखेंगे: सीएम यादव

यूपी सरकार के साथ मिलकर ऐसा काम करेंगे, आनंद आ जाए; पत्नी के साथ बैठकर रामलीला देखी

सतना (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि अयोध्या के समान सरकार चित्रकूट के भी विकास में कोई कमी नहीं रखेगी। यूपी और हमारी एमपी की सरकार मिलकर ऐसा काम करेगी की आनंद आ जाएगा। सीएम ने भारत रत्न नानाजी देशमुख को याद करते हुए कहा कि 1992 में जब यहां डाकुओं का राज था, अव्यवस्थाएं फैली हुई थी, तब उन्होंने यहां के विकास का संकल्प लिया था। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने सभी त्योहारों को धूमधाम से मनाने का संकल्प लिया है। कुछ दिनों पहले ही सरकार ने दशहरा मनाया था। हमने तय किया है कि गोवर्धन पूजा भी करेंगे और घर-घर गौमाता को पालने के लिए प्रेरित भी करेंगे। दूध उत्पादन की क्षमता जो अभी 9 प्रतिशत है, उसे 20 प्रतिशत तक ले जाएंगे। दूध और उससे बने उत्पादों को बढ़ावा देंगे ताकि पशुपालन को प्रोत्साहन मिले।

18 कैंसर मरीज मिले, मुफ्त होगा इलाज

स्व. अरविंद सिंह चौहान की स्मृति में सेठा कैंसर हास्पिटल ने लगाया नि:शुल्क शिविर 3 सौ मरीजों का हुआ परीक्षण

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में स्वगीर्य अरविंद सिंह चौहान स्मृति निशुल्क कैंसर एवं स्वास्थ्य परीक्षण का आयोजन किया गया। शिविर में सेठा कैंसर मल्टीस्पेशलिटी हास्पिटल के डायरेक्टर अतुल सेठा के सानिध्य में 11 डाक्टरों की टीम ने करीबन 300 मरीजों की विभिन्न जांचें की गई।इस जांच में 18 कैंसर के मरीज जांचकर्ताओं को मिले हैं।सभी मरीजों का सेठा कैंसर हास्पिटल में निशुल्क इलाज किया जाएगा। इस अवसर पर नपाध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटैल,पूर्व नपाध्यक्ष अध्यक्ष राजेंद्र सिंह चौधरी , शिक्षा समिति अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल,शासी निकाय अध्यक्ष कैलाश पालीवाल, बुन्देली कवि राजेन्द्र सहारिया, शंभू दरबार के प्रकाश मुद्गल, पूर्व नपाध्यक्ष अभिलाषसिंह चंदेल, कृष्णा पालीवाल, वरिष्ठ वकील बी के शर्मा, वकील भानु प्रकाश तिवारी, नपाध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटैल, महेश साहू, पार्षद विश्वकर्मा, पार्षद राकेश चौरसिया,लाल साहब भैया आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर सेठा कैंसर मल्टीस्पेशलिटी हास्पिटल के डायरेक्टर डॉक्टर अतुल सेठा ने बताया कि शिविर में लगभग 300 मरीजों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया है। इस शिविर में 18 कैंसर के मरीज मिले ।जिसमें 5 मरीज ऐसे है। जिनको

बीमारी के बारे में पता ही नहीं था। डॉक्टर सेठा ने बताया कि परीक्षण में मिले कैंसर के मरीजों का सेठा कैंसर मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल नर्मदापुरम में निशुल्क इलाज किया जाएगा। इसके साथ ही जवाहर वार्ड में चौरसिया समाज के एक एक घर जाकर सभी का बारीकी से जांच करेंगे। उल्लेखनीय है कि जवाहर वार्ड एवं रघुवंशी पुरा वार्ड में विगत 10 वर्षों में कैंसर से 50 से अधिक मौत हो चुकी है । इस संबंध में विगत माह नागरिक समिति ने अनुविभागीय अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर दोनों वार्डों में कारणों का अवलोकन कराने का आग्रह किया गया था। कार्यक्रम का संचालन राजेश शुक्ला किया ।

स्मृति चिन्ह -जवाहर लाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय ने समस्त डाक्टरों को स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया।

डाक्टरों की टीम - नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में सेठा कैंसर अस्पताल के डायरेक्टर डॉक्टर अतुल सेठा, कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ योगेश जैन, डॉक्टर दिवाकर मिश्रा, डॉ अपूर्वा सुरान मधुमेह, थायराइड एवम हार्मोन विशेषज्ञ, पेट लीवर रोग विशेषज्ञ डॉक्टर विकास रायकवार, महिला चिकित्सक डॉ रुचि सक्सेना, गुदा रोग विशेषज्ञ डॉ शिवम मिश्रा, हड्डी रोग विशेषज्ञ वीरेंद्र राजपूत, , नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कमलेश विश्वास, शिशु रोग विशेषज्ञ डा सुनील गौर , आयुर्वेद चिकित्सक डॉ मयंक व्यास आदि टीम में शामिल थे। परीक्षण में कैंसर आंख, पेट, मधुमेह, नासूर मसा, सरवाइकल आदि के काफी मरीज आए थे। मरीजों को शिविर में सेठा केंद्र हॉस्पिटल की ओर से निशुल्क दवाइया भी दी गई

दिवाली पर म.प्र.में चार दिन की छुट्टी, वेतन के भुगतान के आदेश, सीएम ने कर दी घोषणा

भोपाल (नप्र)। दीपावली के मौके पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सरकारी कर्मचारियों को बड़ी खुशखबरी दी है। उन्होंने घोषणा की है कि दीपावली के अगले दिन यानी गोवर्धन पूजा के दिन भी सरकारी अवकाश रहेगा। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि कई कर्मचारी दीपावली पर अपने घरों से दूर दूसरे शहरों में रहते हैं और उन्हें वापस आने में समय लगता है। मुख्यमंत्री ने यह घोषणा भोपाल में प्रदेश भाजपा कार्यालय में मीडिया से बातचीत के दौरान की। इस दौरान उन्होंने यह भी कहा कि हमारे भारत की पहचान पशुपालन से भी है। हमारे यहां दूध और दही की नदियां बहती थीं। गांव का निचला तबका भी गोवर्धन पूजा बड़े उत्साह से मनाता है। हमारे त्योहारों को पुनर्स्थापित करने की जरूरत है।

स्थापना दिवस की भी जोर-शोर से तैयारी

डॉ. यादव ने आगे कहा कि केंद्र सरकार गोवर्धन पूजा को धूमधाम से मनाएगी। गौ माता के विशेष पूजन के साथ इस त्योहार को और भी खास बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश का स्थापना दिवस भी 30 अक्टूबर से लेकर चार नवंबर तक अलग-अलग उत्सव के साथ मनाया जाएगा।

मैहर में अवैध खदान बनी काल

- चार दोस्तों के साथ नहाने गया घर का इकलौता बेटा डूबा

मैहर (एजेंसी)। अवैध तालाब और खदानों में भरे पानी के कारण आए दिन हादसे होते रहते हैं। ऐसा ही एक मामला मध्यप्रदेश के मैहर जिले से सामने आया। यहां रामनगर में पानी से भरी अवैध खदान में तैरने गए एक बच्चे की मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्ट्म के लिए भेज दिया है। बच्चे का शव देखकर परिजनों और इलाके में कोहराम मच गया। छात्र रविवार के दिन घर से ट्यूशन के लिए निकला था और पढ़ाई के बाद दोस्तों के साथ नहाने के लिए खदान पर पहुंचा था।

मुख्यमंत्री ने टपरी पर बनाई अदरक वाली चाय, पत्नी से कुछ कहा तो ठहाकों से गूंज गया कामदगिरी पर्वत

रतलाम (नप्र)। मध्यप्रदेश के चित्रकूट में लोग उस समय दंग रह गए, जब लोगों ने मध्यप्रदेश के मुखिया को एक दुकान में चाय बनाते देखा। वीडियो में मुख्यमंत्री अदरक वाली चाय बनाते दिख रहे हैं। सतना जिले के चित्रकूट में कामदगिरी पर्वत की परिक्रमा के दौरान चाय की टपरी देख वह अपने आपको रोक नही पाए और चाय बनाने लगे। उन्होंने अदरक वाली चाय लोगों को पिलाई साथ में खुद भी चाय का लुत्फ उठाया। दरअसल मध्यप्रदेश के मुखिया मोहन यादव दो -दिन के चित्रकूट दौरे पर हैं। परिक्रमा मार्ग पर राधा कृष्ण मंदिर के नीचे एक चाय की दुकान देखकर सीएम अपने आप को रोक नही पाए और दुकान में जाकर खुद चाय बनाने लगे। यह देख वहां पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। चाय बनाने के बाद सीएम ने चाय छानकर लोगों को भी पिलाई साथ ही खुद भी चाय का आनंद लिया।

रतलाम के डेमू ट्रेन में लगी आग, खेतों में कूदकर यात्रियों ने बचाई जान

रतलाम (नप्र)। रविवार शाम को इंदौर से रतलाम आ रही डेमू पैसेंजर ट्रेन में अचानक आग लग गई। इस घटना से यात्रियों में हड़कंप मच गया। प्रीतमनगर और रुनीजा रेलवे स्टेशनों के बीच ट्रेन के इंजन से धुआं निकलना शुरू हो गया। लोको पायलट ने तुरंत ट्रेन रोक दी। धुआं देखकर यात्रियों में भगदड़ मच गई और वे अपनी जान बचाने के लिए ट्रेन से कूदकर खेतों में भाग गए। जब लोको पायलट नीचे उतरा तो उसने देखा कि इंजन के नीचे आग की लपटें उठ रही हैं। उसने तुरंत यात्रियों को सुरक्षित स्थान पर जाने को कहा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में भिलाला समाज के प्रांतीय सम्मेलन में 'लोकल फॉर वोकल' को प्रोत्साहन देने भिलाला समाज के स्टाल से गर्म कपड़े खरीदे।

डेंगू का प्रकोप

डेंगू के 8 नए मरीज मिले, अब तक कुल संख्या 519

भोपाल (नप्र)। राजधानी में शनिवार को 152 जांच में 8 नए डेंगू पॉजिटिव मरीज मिले हैं। बीते 26 दिनों में राजधानी में डेंगू मरीजों की जांच के लिए 3487 सैंपल लिए गए हैं। इनमें से 174 की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। अब शहर में डेंगू पॉजिटिव मरीजों की संख्या बढ़कर 519 हो गई है। इसी तरह 81 जांच में 5 नए चिकनगुनिया के पॉजिटिव मरीज मिले हैं। अकेले अक्टूबर माह में 1350 जांच में 77 चिकनगुनिया के पॉजिटिव मरीज मिले हैं। इसे मिलाकर शहर में 181 चिकनगुनिया पॉजिटिव मरीज हो चुके है। ये मरीज मरीज टीबी अस्पताल, थरसार कॉलोनी, जीएमसी, गिन्नौरी, शंकराचार्य नगर, शिवनगर, शीतल नगर, शाहजहांनाबाद, अब्बास नगर, अवधपुरी, कल्याण नगर, करबला में सामने आए है। सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि यह वायरस घर के आसपास जमा पानी में पनपता है। पास जमा पानी को साफ रखना चाहिए।

मोहन नागर को भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान

भोपाल। मध्यप्रदेश के सामाजिक कार्यकर्ता मोहन नागर को 'जल संरक्षण एवं भू-जल संवर्धन' के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान-2024-25' से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ की ओर से नवंबर माह में दिल्ली में आयोजित सम्मान समारोह में दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि न्यास प्रतिवर्ष ऐसी दो विभूतियों या संस्थाओं को सम्मानित करता है जो समाज में विभिन्न प्रकार से सेवा कार्यों में जुटे हुए हैं और उनके कार्य का परिणाम समाज में दिखाई देता है।

इस सम्मान में अभिनंदन पत्र, श्रीफल, अंगवस्त्र के साथ 2 लाख 51 हजार की सम्मान राशि भी प्रदान की जाती है। मोहन नागर ने बैतूल के क्षेत्र में जल संरक्षण एवं भू-जल संवर्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। वे गंगा अवतरण अभियान के माध्यम से ऐसे क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, जहां पानी की समस्या रहती है। नागर के सामाजिक कार्यों एवं कौशल को देखते हुए हाल ही में उन्हें मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदार भी सौंपी गई है। नागर पूर्व में भारत सरकार द्वारा जल प्रहरी एवं वाटर हीरो के सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं।

भाजपा में संगठन चुनाव की घोषणा

कोई भी निर्णय चुनाव अधिकारी की अनुमति से होगा

भोपाल (नप्र)। भाजपा में संगठन चुनाव की घोषणा और हर जिले के लिए चुनाव अधिकारी की नियुक्ति के साथ ही भाजपा संगठन में आचार संहिता लागू हो गई है। संगठन का कोई भी निर्णय अब संबंधित जिले के चुनाव अधिकारी से पूछ कर होगा। संगठन चुनाव की तैयारी के लिए प्रदेशस्तरीय कार्यशाला को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों ने संबोधित किया। कार्यशाला के बाद हुई कमराबंद बैठक में संगठन ने मंत्रियों और विधायकों को दो टूक शब्दों में कहा कि चुनाव में पुट्ठावाद नहीं चलेगा। पिछले कुछ संगठन चुनावों में मंत्री और विधायक अपने क्षेत्र में अपनी पसंद के कार्यकर्ताओं को जिला अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी बनवाते रहे हैं। संगठन के कुछ वरिष्ठ पदाधिकारियों ने कहा कि इसका नतीजा यह होता है कि उस जिले में संगठन केवल संबंधित जनप्रतिनिधि के अनुसार संचालित होने लगता है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि संगठन के साथ मिलकर भाजपा सरकार जनहितैषी कार्य कर रही है। प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि सदस्यता अभियान की सफलता के बाद भाजपा एक बार फिर दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन गया है।

ये हैं भाजपा के जिला चुनाव अधिकारी

मुरैना - शरदेंदु तिवारी, भिंड - गोपीकृष्ण नेमा, दतिया - अनिल जैन कालूहेड़ा, ग्वालियर नगर - प्रदीप लारिया, ग्वालियर ग्रामीण, विवेक बंटी साहू, श्योपुर - आलोक संजर, शिवपुरी - शैलेंद्र शर्मा, गुना - विनोद गोटिया, अशोक नगर -लालसिंह आर्य, सागर - सीमा सिंह, टीकमगढ़- कांतदेव सिंह, निवाड़ी - कमल माखीजानी, छतरपुर - योगेश ताम्रकार, दमोह - आशीष दुबे, पन्ना - विनोद यादव, रीवा- बृजेंद्र प्रताप सिंह, मऊगंज - सतानंद गौतम, सतना -मुकेश सिंह चतुर्वेदी, मैहर- प्रभुदयाल पटेल, सीधी - लोकेंद्र पाराशर, सिंगरौली -शशांक श्रीवास्तव, शहडोल - अरुण द्विवेदी, अनूपपुर -वीरेंद्र गुप्ता, उमरिया - नरेंद्र त्रिपाठी, जबलपुर नगर - बंशीलाल गुर्जर, जबलपुर ग्रामीण-संतोष पारीख, कटनी - हरिशंकर खटीक, डिंडौरी-राजेश पांडे,मंडला - प्रज्ञा त्रिपाठी, बालाघाट - राघवेंद्र गौतम, सिवनी - राजेश मिश्रा, नरसिंहपुर - आलोक शर्मा, छिंदवाड़ा - हेमंत खंडेलवाल, पांढुर्णा - जयप्रकाश राजौरिया, नर्मदापुरम -नरेश दिवाकर, हरदा - महेंद्र यादव, बैतूल - सुदर्शन गुप्ता, भोपाल नगर -कविता पाटीदार, भोपाल ग्रामीण - क्षितिज भट्ट, रायसेन - अमिता चपरा, विदिशा - राधेश्याम पारिख, सीहोर - तेजबहादुर सिंह, राजगढ़ - सुजीत जैन, इंदौर नगर - रणवीर सिंह रावत, इंदौर ग्रामीण - यशपाल सिंह सिसौदिया, खंडवा - रायसिंह सेंधव, बुरहानपुर - आशीष शर्मा , खरगौन - देवीलाल धाकड़, बड़वानी - श्याम बंसल, अलीराजपुर - बहादुर सिंह मुकाती, झाबुआ - पंकज जोशी, धार - रामेश्वर शर्मा, उज्जैन नगर - श्यामसुंदर शर्मा, उज्जैन ग्रामीण- विष्णु खत्री, शाजापुर - दिलीप पटोदिया, आगर - जयदीप पटेल, देवास - गजेंद्र पटेल, रतलाम-सुमेरसिंह सोलंकी, मंदसौर - पुष्यमित्र भार्गव।

मिस इंडिया निकिता पोरवाल ने किए महाकाल के दर्शन

नंदी के कान में मन्नत बोली,फैंस से कहा-जय महाकाल; पोती को देख डांस करने लगीं दादी

उज्जैन (नप्र)। फेमिना मिस इंडिया-2024 बनने के बाद निकिता पोरवाल ने भगवान महाकाल के दर्शन कर उनका आशीर्वाद लिया। निकिता रविवार दोपहर 12 बजे उज्जैन पहुंचीं। सबसे पहले अरविंद नगर स्थित अपने घर गईं। यहां मां राजकुमारी पोरवाल ने बेटी की आरती उतारी। दादी नर्मदा पोरवाल ने दुलार किया। दादी तो इतनी उत्साहित थीं कि जैसे ही निकिता ने घर में प्रवेश किया वे डांस करने लगीं। इस मौके पर लोगों ने फूल बरसाए, आतिशबाजी की। बच्चियों ने वेलकम डांस किया। इस दौरान निकिता ने जय महाकाल कहकर सभी का अभिवादन किया। टॉवर चौक से इस्कॉन मंदिर तक निकिता रोड शो भी करेंगी।

नंदी के कान में मनोकामना कही: निकिता श्री महाकालेश्वर मंदिर पहुंचीं और गर्भ गृह की देहरी से भगवान महाकाल का आशीर्वाद लिया। नंदी महाराज के कान में मनोकामना कही और वहीं बैठकर भगवान महाकाल का ध्यान लगाया। इससे पहले श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति की ओर से मंदिर समिति के सहायक प्रशासक मूलचंद जूनवाल और प्रशांत त्रिपाठी ने भगवान महाकाल का दुपट्टा प्रसाद और भगवान की तस्वीर भेंट कर मिस इंडिया का सम्मान किया।भगवान महाकाल के दर्शन करने के बाद निकिता ने सभा मंडप में विराजित भगवान वीरभद्र और और माता जी के दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

करोंद में हाईटेंशन लाइन से झुलसी महिला

छत पर नहाते समय चपेट में आई, 50 प्रतिशत झुलसी; 16 दिन में दूसरा हादसा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के करोंद स्थित रतन कॉलोनी में रविवार दोपहर 12 बजे बड़ा हादसा हो गया। एक 40 साल की महिला घर की छत के ऊपर से गुजर रही बिजली की हाईटेंशन लाइन की चपेट में आ गई। वह 50 प्रतिशत तक झुलस गई। 16 दिन पहले इसी जगह पर ऐसा हादसा हो चुका है। इससे गुस्साए लोगों ने हंगामा कर दिया। उन्होंने बिजली कंपनी के अफसरों पर लापरवाही का आरोप लगाया है। हाईटेंशन लाइन की चपेट में रतन कॉलोनी की किरण जाटव आ गई। क्षेत्र के विनोद जोहरे ने बताया कि, घर की छत पर ही बाथरूम बना है। उसमें महिला नहा रही थी। तभी वह हादसे का शिकार बन गई। तुरंत उसे पहले सांई हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। फिर हमीदिया अस्पताल में ले गए। इधर, फायर फाइटर पंकज यादव दमकल के साथ मौके पर पहुंचे और बिजली की सप्लाई बंद कराई। किरण के पति कैलाश जाटव सब्जी का ठेला लगाते हैं। रहवासी विनोद ने बताया, कैलाश के पास मोबाइल नहीं है। इसलिए उन्हें इलाके के युवक ढूंढने निकले। मौके पर किरण के दोनों बेटे मौजूद थे, जो हादसे से दहशत में आ गए। मोहल्ले के लोगों ने उन्हें समझाया।

दुर्गा पांडाल में भी फैल चुका है करंट: इससे पहले 12 अक्टूबर को भी बड़ा हादसा हो चुका है। हाईटेंशन लाइन की चपेट में आने से माखन साहू (35), विपिन जाटव (17), दिनेश बिरजा (21) और रोहन जाटव (21) झुलस गए थे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी की मन की बात का मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सतना में किया श्रवण

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के देशवासियों से संवाद के लिए प्रसारित मन की बात कार्यक्रम का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सतना के सरस्वती विद्यापीठ में श्रवण किया । इस अवसर पर नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री श्री लखन पटेल, सतना महापौर श्री योगेश ताम्रकार सहित जन-प्रतिनिधि उपस्थित थे। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने त्यौहारों के समय में वोकल फोर लोकल के मंत्र का अनुसरण करते हुए देशवासियों से स्थानीय दुकानदारों से खरीदारी को प्रोत्साहित करने का आहवान किया। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए परिवार सहित वैलनेस पर ध्यान देने, परंपरागत खेलों को अपनाने और व्यायाम को जीवनशैली का हिस्सा बनाने की बात भी कही। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सायबर फ्रार्ड से बचने के लिए जागरुक रहने और सेफ डिजीटल इंडिया में योगदान देने के लिए भी सक्रिय रहने का देशवासियों से आहवान किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देशवासियों से लौह पुरुष सरदार पटेल तथा धरती-आबा बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर होने वाले कार्यक्रमों में सहभागिता करते हुए इन गतिविधियों को विरासत से विकास का उत्सव बनाने का आहवान किया।

भोपाल में कमल की पैदावार कम

इस बार 17000 फूल ही खिले... तालाब गहरा होता तो ज्यादा होते

भोपाल (नप्र)। मां महालक्ष्मी को अर्पित किए जाने वाले,धन और विजय के प्रतीक कमल की फूल की पैदावार इस बार भोपाल में कम हुई हैं। फुटकर में 50 से 200 रुपए तक में कमल का फूल बिकेगा। मांग ज्यादा होने से दूसरे जिलों और राज्यों से कमल लाया जा रहा है। लहारपुर तालाब में 4 लाख बीज डालने के बावजूद 17 हजार के आसपास फूलों की फसल हुई है। इसकी वजह तालाब की सफाई नहीं होना बताया है। तालाब बहुत उथला हो गया है।

सीहोर के तालाबों में भी फसल कम: कमल की पैदावार चिकलोद और सीहोर के तालाबों में होती है। वहां भी यही स्थिति है। चिकलोद के राहुल रैकवार ने बताया कि उन्होंने नीलकमल प्रजाति के गुलाबी कमल के 4 लाख बीज डाले थे। 17 हजार ही कमल

फूल की फसल हुई। वे भी छोटे साइज के हैं ।

बाहर से आने वाले कमल के फूल महंगे: इधर, फूल विक्रेताओं का कहना है कि बाहर से आने वाले फूल बहुत ही महंगे मिल रहे हैं। पैदावार अच्छी न होने से मां लक्ष्मी को चढ़ने वाले नीलकमल की मांग ज्यादा पूर्ति कम है। गौरतलब है कि पिछले साल भोपाल में 40 से 70 हजार कमल की पैदावार हुई थी।

पेंच, कान्हा और मांडू में बनेंगे ट्राइबल कैफेटेरिया

आदिवासी संस्कृति, खान-पान और शिल्पकारी से पर्यटकों को रूबरू कराने की तैयारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर ट्राइबल कैफेटेरिया खोले जाएंगे। सिवनी में पेंच नेशनल पार्क के समीप टौरिया गांव, बालाघाट जिले में कान्हा नेशनल पार्क के पास और धार में मांडू में ट्राइबल कैफेटेरिया तैयार किए जा रहे हैं। इनसे पर्यटकों को आदिवासी संस्कृति, खान-पान, व्यंजन और शिल्पकारी से रूबरू होने का मौका मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा-कि ऐसा करके न केवल पर्यटन को बढ़ावा दिया जाएगा बल्कि स्थानीय आदिवासी परिवारों को रोजगार के अवसर भी मिल सकेंगे। कैफेटेरिया में स्थानीय आदिवासी पकवान, हस्त शिल्प और पारंपरिक सजावट उपलब्ध होगी, जिससे पर्यटक अनोखे सांस्कृतिक एवं पारिवारिक अनुभव का आनंद ले सकेंगे।

पांच ट्राइबल कैफेटेरिया बनाए जाएंगे

जनजातीय कार्य विभाग के अंतर्गत काम करने वाले वन्या संस्थान ने इसका प्रस्ताव शासन को भेजा था। इसके बाद राज्य सरकार ने 5 ट्राइबल कैफेटेरिया की मंजूरी दी है। पर्यटन विकास निगम (एमपीटी) इन ट्राइबल कैफेटेरिया का संचालन करेगा। इसके लिए आदिवासियों के स्व-सहायता समूहों को जोड़ा जाएगा। ये समूह क्षेत्रीय आदिवासियों के पारंपरिक व्यंजन तैयार कर इस कैफेटेरिया से विक्रय करेंगे।

पहले चरण में तीन कैफेटेरिया बना रहे

पहले चरण में प्रदेश के 3 जिलों में ट्राइबल कैफेटेरिया की स्थापना के लिए स्थल चयन कर कार्य प्रारंभ कर दिया है। ट्राइबल कैफेटेरिया के लिए डिजाइन भी फाइनल हो चुका है। दूसरे चरण में छतरपुर सहित एक अन्य जिले में भी ऐसे ही ट्राइबल कैफेटेरिया खोले जाएंगे।

जनजातीय क्षेत्र प्रशासन के तहत मिली विकास राशि

कैफेटेरिया के लिए जनजातीय क्षेत्र प्रशासन के अंतर्गत विकास राशि प्राप्त हो गई है। ये ट्राइबल कैफेटेरिया जनजातीय कार्य विभाग के पूर्ण स्वामित्व में वन्या संस्थान के माध्यम से एमपीटी द्वारा चलाए जाएंगे। ट्राइबल कैफेटेरिया के लिए एमपीटी जनजातीय वर्ग के स्व-सहायता समूहों को समुचित प्रशिक्षण व तकनीकी मार्गदर्शन भी देगा।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

रायपुर दक्षिण विधानसभा में बृजमोहन की साख दांव पर

कहा जा रहा है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा के उपचुनाव में भले सुनील सोनी भाजपा के प्रत्याशी हैं, पर यहां बृजमोहन अग्रवाल की साख दांव पर है। सुनील सोनी को बृजमोहन अग्रवाल का करीबी माना जाता है। चर्चा है कि बृजमोहन अग्रवाल के कारण ही सुनील सोनी को रायपुर दक्षिण से भाजपा की टिकट मिली है। संघ से जुड़े लोग भी बृजमोहन से मात खा गए। 2024 के लोकसभा चुनाव में सुनील की टिकट काटकर हाईकमान ने बृजमोहन को सांसद का चुनाव लड़ाया। जीत गए तो विधायकी से इस्तीफा दे दिया। बृजमोहन रायपुर दक्षिण से लगातार विधायक रहे। स्वाभाविक है अपनी परंपरागत सीट से वे अपने ही समर्थक को टिकट दिलाते। कहा जा रहा है कि सुनील सोनी को जिताने की जिम्मेदारी बृजमोहन की ही है। सुनील सोनी के मुकाबले कांग्रेस ने आकाश शर्मा को मैदान में उतारा है। कांग्रेस यहां युवा और उम्रदराज की लड़ाई मान रही है तो भाजपा कांग्रेस के प्रत्याशी को अनजान बता रही है। अब लड़ाई कितनी रोचक होती है, यह तो समय बताएगा, पर माना जा रहा है कि इस सीट से भाजपा की जीत से सुनील सोनी के साथ बृजमोहन अग्रवाल की भी राजनीतिक दिशा तय होगी। दक्षिण विधानसभा का उपचुनाव विष्णुदेव साय सरकार के लिए भी अहम है। राज्य में साय सरकार के गठन के बाद पहला विधानसभा उपचुनाव है। यहां का चुनाव परिणाम साय सरकार के लिए लिटमस टेस्ट जैसा होगा,वहीं विधानसभा और फिर लोकसभा चुनाव में बुरी तरह मात खाने के बाद कांग्रेस रायपुर दक्षिण के चुनाव में जीत से संजीवनी के फेर में है।

आकाश शर्मा को किसने दिलाया टिकट ?: कांग्रेस में चर्चा का विषय है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट से आकाश शर्मा को टिकट किसने दिलाया ?

आकाश शर्मा प्रदेश युवक कांग्रेस के अध्यक्ष हैं और एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष रह चुके हैं। कोई कह रहा है आकाश शर्मा को पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने टिकट दिलाया, तो कोई कह रहा है प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज और कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिवों ने मिलकर टिकट दे दिया। आकाश शर्मा युवा हैं और नए चेहरे हैं। आकाश को टिकट देने से कांग्रेस का एक धड़ा खुश नहीं है। कहते हैं रायपुर दक्षिण से चुनाव लड़ने के लिए सबसे पहले नामांकन फार्म खरीदने वाले कांग्रेस नेता प्रमोद दुबे और 2018 में दक्षिण से चुनाव लड़ चुके कन्हैया अग्रवाल दूरी बनाए हुए हैं। बताते हैं कांग्रेस के कई नेता रायपुर दक्षिण में आकाश शर्मा का चुनाव प्रचार करने की जगह महाराष्ट्र और झारखंड में कांग्रेस का चुनाव प्रचार करने की जुगत में हैं। कुछ लोगों की महाराष्ट्र और झारखंड के लिए लाटरी लग भी गई है।

एक कलेक्टर से खफा भारत सरकार के लोग: चर्चा है कि भारत सरकार का एक विभाग छत्तीसगढ़ के एक जिला कलेक्टर से खफा है। खबर है कि कलेक्टर ने अपने जिले में अक्टूबर महीने के पहले हफ्ते में जोर-शोर से एक कार्यक्रम आयोजित करवाया। कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार भी खूब हुआ। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के लोगों को भी न्योता गया। भारत सरकार के लोग आए और कार्यक्रम में शरीक हुए। कहते हैं कि कार्यक्रम के मूल उद्देश्य की जगह कलेक्टर का गुणगान सुनकर भारत सरकार के लोगों ने माथा पकड़ लिया। अब कहा जा रहा है कि इसी बात को लेकर भारत सरकार का लोगों के जीवन से जुड़ा विभाग कलेक्टर से नाराज चल रहा है। इस कार्यक्रम में बच्चे से बूढ़े सभी आयु वर्ग के लोग जुटे। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी पहुंचे। राज्य सरकार ने इस कार्यक्रम के लिए दो किश्तों में कई करोड़ बजट भी दिए। निजी संस्थाओं से भी मदद ली गई। भारत सरकार को भी प्रस्ताव भेजा गया। भारत सरकार की तरफ से हां-ना का जवाब नहीं आया। माना जा रहा कि भारत सरकार के लोग कलेक्टर के अंदाज से खुश नहीं हैं तो, भारत सरकार से कुछ वित्तीय मदद मिलने की उम्मीद कम है।

छत्तीसगढ़ पुलिस के दुर्दिन: लगता है छत्तीसगढ़ पुलिस के दुर्दिन चल रहे हैं। कभी वह अपराधियों के हाथों पिट जा रही, तो कभी जनता के हाथों मार खा रही है। छत्तीसगढ़ में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। पुलिस का भय अपराधियों और जनता दोनों में खत्म होता दिख रहा है। सूरजपुर में एक अपराधी द्वारा एक कांस्टेबल के ऊपर गर्म तेल फेंक देना और बलरामपुर में थाने पर हमला व महिलाओं द्वारा एक महिला एएसपी पर पथराव उदहारण है। आरोपी का हेड कांस्टेबल के घर घुसकर उसके परिजनों की हत्या कर देना राज्य में पुलिस प्रशासन के खत्म होते इकबाल को बताता है। इसके पहले बलौदाबाजार और कवर्धा में भी पुलिस फेल हो चुकी है। ला एंड आर्डर मेंटेन नहीं कर पाने के कारण विष्णुदेव साय की सरकार अब तक तीन एसपी को हटा चुकी है। लोग कहने लगे हैं कि पुलिस कानून-व्यवस्था की जगह दूसरे काम में लग जाएगी, तो जनता का गुस्सा फूटेगा ही।

रोहित व्यास किस्मत वाले: 2017 बैच के आईएएस रोहित व्यास को सूरजपुर की जगह जशपुर का कलेक्टर बनाए जाने पर उन्हें किस्मत वाला कहा जा रहा है। जशपुर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का गृह जिला है और सूरजपुर से बड़ा भी। फिर सूरजपुर में पिछले दिनों बड़ी घटना के बाद भी उन्हें मुख्यमंत्री के गृह जिले की कलेक्टरी मिल गई। इसके पहले बलौदाबाजार में घटना हुई तो कलेक्टर को हटाने के साथ उन्हें निलंबित भी कर दिया गया। कवर्धा की घटना को लेकर भी कलेक्टर को हटा कर एक निगम का प्रबंध संचालक बना दिया गया।

विजय दयाराम के. पुरस्कृत

2015 बैच के आईएएस विजय दयाराम के. को सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का प्रबंध संचालक बनाकर पुरस्कृत कर दिया। सरकार ने विजय दयाराम के. को पिछले महीने बस्तर कलेक्टर के पद से हटाकर राज्य कौशल विकास अभिकरण का सीईओ बना दिया था। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के प्रबंध संचालक डॉ जगदीश सोनकर के कामकाज से सरकार खुश नहीं थी। कर्मचारी भी नाराज चल रहे थे। वहां समन्वय बनाकर चलने वाले एक अफसर की तलाश थी, ऐसे में सरकार ने विजय दयाराम के. को वहां की जिम्मेदारी सौंप दी।

सीनियर आईएएस की लिस्ट जल्द

माना जा रहा है कि 2004 बैच के आईएएस अमित कटारिया के अगले महीने वापसी के बाद मंत्रालय में पदस्थ आईएएस अफसरों की पदस्थापना में कुछ हेरफेर हो सकती है। अभी मंत्रालय में पदस्थ कुछ अफसरों के पास दो-तीन विभाग हैं, ऐसे में एक-दो अफसरों का विभाग कम किया जा सकता है। सीनियर आईएएस अफसरों के साथ कुछ कनिष्ठ अफसरों का भी प्रभार व जिला बदल सकता है।